

ज्ञानशौर्यम्



ISSN : 2582-0095

**Peer Reviewed and Refereed International
Scientific Research Journal**

Website : <http://gisrrj.com>



GYANSHAURYAM

INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED

RESEARCH JOURNAL

Volume 5, Issue 4, July-August-2022

Email : editor@gisrrj.com Website : <http://gisrrj.com>



ज्ञानशौर्यम्

**Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal**

Volume 5, Issue 4, July-August-2022

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2582-0095

**Peer Reviewed and Refereed International Journal
Bimonthly Publication**

**Published By
Technoscience Academy**



Editorial Board

Advisory Board

- **Prof. Radhavallabh Tripathi**
Ex-Vice Chancellor, Central Sanskrit University, New Delhi, India
- **Prof. B. K. Dalai**
Director and Head. (Ex) Centre of Advanced Study in Sanskrit. S P Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Divakar Mohanty**
Professor in Sanskrit, Centre of Advanced Study in Sanskrit (C. A. S. S.), Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Ramakant Pandey**
Director, Central Sanskrit University, Bhopal Campus. Madhya Pradesh, India
- **Prof. Kaushalendra Pandey**
Head of Department, Department of Sahitya, Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Dinesh P Rasal**
Professor, Department of Sanskrit and Prakrit, Savitribai Phule Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Parag B Joshi**
Professor & OsD to VC, Department of Sanskrit Language & Literature, HoD, Modern Language Department, Coordinator, IQAC, Director, School of Shastric Learning, Coordinator, research Course, KKSU, Ramtek, Nagpur, India
- **Prof. Sukanta Kumar Senapati**
Director, C.S.U., Eklavya Campus, Agartala, Central Sanskrit University, Janakpuri, New Delhi, India
- **Prof. Sadashiv Kumar Dwivedi**
Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Coordinator, Bharat adhyayan kendra, Banaras Hindu University, Varanasi Uttar Pradesh, India
- **Prof. Manoj Mishra**
Professor, Head of the Department, Department of Vedas, Central Sanskrit University, Ganganath Jha Campus, Azad Park, Prayagraj, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Ramnarayan Dwivedi**
Head, Department of Vyakarana Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh, India

- **Prof. Ram Kishore Tripathi**
Head, Department of Vedanta, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
-

Editor-In-Chief

- **Dr. Raj Kumar**
SST, Palamu, Jharkhand, India
-

Senior Editor

- **Dr. Pankaj Kumar Vyas**
Associate Professor, Department- Vyakarana, National Sanskrit University (A central University), Tirupati, India
-

Associate Editor

- **Prof. Dr. H. M. Srivastava**
Department of Mathematics and Statistics, University of Victoria, Victoria, British Columbia, Canada
- **Prof. Daya Shankar Tiwary**
Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Prof. Satyapal Singh**
Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Dr. Ashok Kumar Mishra**
Assistant Professor (Vyakaran), S. D. Aadarsh Sanskrit College Ambala Cantt Haryana, India
- **Dr. Raj Kumar Mishra**
Assistant Professor, Department of Sahitya, Central Sanskrit University Vedavyas Campus Balahar Kangara Himachal Pradesh, India
- **Dr. Somanath Dash**
Assistant Professor, Department of Research and Publications, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

Editors

- **Dr. Suneel Kumar Sharma**
Assistant Professor Department of Education, Shri Lalbahadur Shastri National Sanskrit University (Central University) New Delhi, India
- **Dr. Rajesh Sarkar**
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Rajesh Mondal**
Research Scholar Department of Vyakarana, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India
- **Dr. Sheshang D. Degadwala**
Associate Professor & Head of Department, Department of Computer Engineering, Sigma University, Vadodara, Gujarat

Assistant Editors

- **Dr. Shivanand Shukla**
Assistant Professor in Sahitya, Government Sanskrit College, Patna, Bihar, India |Constituent Unit : Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit University, Bihar, India
- **Dr. Shalendra Kumar Sahu**
Assistant Professor, Department of Sahitya Faculty of S.V.D.V, Banaras Hindu University (BHU) Varansi, Uttar Pradesh, India

International Editorial Board

- **Vincent Odongo Madadi**
Department of Chemistry, College of Biological and Physical Sciences, University of Nairobi, P. O. Box, 30197-00100, Nairobi, Kenya
- **Dr. Agus Purwanto, ST, MT**
Assistant Professor, Pelita Harapan University Indonesia, Pelita Harapan University, Indonesia

- **Dr. Morve Roshan K**
Lecturer, Teacher, Tutor, Volunteer, Haiku Poetess, Editor, Writer, and Translator
Honorary Research Associate, Bangor University, United Kingdom
 - **Dr. Raja Mohammad Latif**
Assistant Professor, Department of Mathematics & Natural Sciences, Prince Mohammad Bin
Fahd University, P.O. Box 1664 Al Jhobar 31952, Kingdom of Saudi Arabia
 - **Dr. Abul Salam**
UAE University, Department of Geography and Urban Planning, UAE
-

Editorial Board

- **Dr. Kanchan Tiwari**
Assistant Professor, Department of Sahitya, Uttarakhand Sanskrit University Haridwar,
Uttarakhand, India
- **Dr. Jitendra Tiwari**
Assistant Professor, Sahitya, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Eklavya Campus, Radhanagar,
Agartala, Tripura, India
- **Dr. Shilpa Shailesh Gite**
Assistant Professor, Symbiosis Institute of Technology, Pune, Maharashtra, India
- **Dr. Ranjana Rajnish**
Assistant Professor, Amity Institute of Information Technology(AIIT), Amity University,
Lucknow, Uttar Pradesh, India
- **Dr. Vimalendu Kumar Tripathi**
Lecturer +2 High School, Bengabad, Giridih, Jharkhand, India

CONTENT

SR. NO	ARTICLE/PAPER	PAGE NO
1	मेवाड़ के शिलालेखों में वर्णित राजनैतिक चिन्तन डॉ. मधुबाला जैन	01-14
2	उपनिषदों में वाक् तत्त्व का स्वरूप डॉ. भोला नाथ	15-18
3	केदारनाथ सिंह की कविताओं में प्रकृति प्रेम ओम प्रकाश वत्स	19-23
4	ई स्वास्थ्य सेवाओं से मध्यप्रदेश के विपणन पर सकारात्मक प्रभाव शिवालिका सोहगौरा, डॉ. एम. यू. सिद्दीकी	24-26
5	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का शैक्षिक गुणवत्ता में योगदान डॉ. धर्मेन्द्र कुमार वैश्य	27-36
6	एम.एस. पी. के लिए सर्वजनिक वितरण प्रणाली की बढ़ती भूमिका पूजा शुक्ला, डॉ. सतीश कुमार गर्ग	37-39
7	Globalisation and New Tourism - A Sociological Understanding Khushboo	40-47
8	भारतीयशिक्षासमाजयोः जातिभेदस्य प्रभावः प्रमोद कुमार दास	48-51

मेवाड़ के शिलालेखों में वर्णित राजनैतिक चिन्तन

डॉ० मधुबाला जैन

अतिथि व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय मावली, उदयपुर, राजस्थान।

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 01-14

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 05 July 2022

Published : 30 July 2022

शोधसारांश – मेवाड़ के इन शिलालेखों में यहाँ की राजनैतिक संस्थिति भी उजागर होती है जिसमें प्राचीन राजनैतिक संस्थिति के अनुसार ही राज्य के सप्तांगों का वर्णन हमें प्राप्त होता है।

मुख्य शब्द – मेवाड़, शिलालेख, राजनैतिक, राजतन्त्र, भारतीय।

प्राचीन भारतीय राजनैतिक संस्थिति— प्राचीन भारतीय परम्परा में राजतन्त्र को ही प्रचलित तथा साधारण शासन व्यवस्था माना गया है। राजा का पद सर्वाधिक सम्मानित और सर्वोच्च माना जाता था। ऋग्वेद में उसे इन्द्र और वरुण के नाम से अभिहित किया गया है।¹ धर्मसूत्रों के अनुसार राजा को शास्त्रविहित कार्य करने चाहिए, सत्य निर्णय देना चाहिए। बाहर-भीतर से पवित्र होना चाहिए इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना चाहिए। प्रजा को समान दृष्टि से देखना चाहिए और प्रजा का कल्याण करना चाहिए।² कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि राज्य सात अंगों से मिलकर बना है। उसके अनुसार ये सात अंग राज्य की सप्त-प्रकृतियाँ हैं। वे हैं—स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोषदण्ड और मित्र।³ ये सभी अंग एक-दूसरे के सहयोगी, सहायक और पूरक हैं, अतः सभी को समान महत्व दिया जाना चाहिए।⁴ वैदिक काल में राष्ट्र अथवा जनपद का मुखिया राजा होता था। राजा का पद वंश परम्परा पर आधारित था, पर यह भी आवश्यक था कि प्रजा द्वारा राजा का वरण किया जाए। यह अथर्ववेद के एक मंत्र से ज्ञात होता है जिसमें कहा गया है कि 'हे राजा! प्रजा राज्य के लिए तुम्हारा वरण करती है, सब दिशाओं के लोग तुम्हारा वरण करते हैं, तुम राष्ट्र रूपी शरीर के सबसे ऊँचे स्थान पर आसीन रहो और वहाँ रहते हुए उग्र शासक के समान सब में सम्पत्ति का विभाजन करो।'⁵ राजा को शासकीय कार्यों में निर्णय लेने और उन्हें लागू करने के लिए प्रशासकीय अधिकारियों के सहयोग की आवश्यकता होती थी, जिसके लिए मन्त्री, अमात्य और सचिव की नियुक्ति की जाती थी।

वैदिक साहित्य में राजा के सहायक के रूप में पुरोहित का भी वर्णन प्राप्त होता है। वैदिककालीन शासन व्यवस्था में पुरोहित को राजा की आत्मा माना जाता था। शासन को समृद्ध बनाने के लिए पुरोहित द्वारा राजा को उचित धार्मिक और नैतिक सहायता प्रदान की जाती थी। वेदों के अनुसार पुरोहित का कार्य राजा और उसके कुल को मन्त्र और आध्यात्मिक शक्ति द्वारा रक्षा करना था। यथा—पुरोहित विश्वामित्र ने अपने मन्त्रों तथा आध्यात्मिक शक्ति द्वारा भरतकुल की रक्षा की थी।

मनुस्मृति में मन्त्रियों के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है कि राजा वंश परम्परागत, शास्त्रज्ञ, शूर, शस्त्र-विद्या में निपुण, कुलीन और परीक्षित व्यक्तियों को अपना अमात्य नियुक्त करे।⁶ याज्ञवल्क्य स्मृति में

भी मन्त्रियों की योग्यता के विषय में कहा गया है कि राजा को ज्ञानी, वंश-परम्परा से आने वाले, धैर्यवान और पवित्र पुरुषों को मन्त्री बनाना चाहिए। मन्त्रणाकाल में मन्त्रियों के अतिरिक्त सभा में अन्य कोई भी व्यक्ति न हो, अन्यथा वह मन्त्रणा गुप्त नहीं रह पायेगी।⁷

प्राचीन काल में स्मृतिकारों ने जनपद के लिए 'देश' शब्द का प्रयोग किया है। जनपद या पुर उसे कहा जाता था जहाँ सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ हो अर्थात् प्रजा को आसानी से रोजगार मिल सके, जो फल और पुष्पों से लदा हो, जहाँ एक जगह जल एकत्र न होता हो तथा आसपास सभी आवश्यक चीजें उपलब्ध हो।⁸ स्मृतिकालीन शासन अनेक छोटी-छोटी इकाइयों में बंटा हुआ था। शासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' थी और इसके प्रमुख अधिकारी को 'ग्रामिक' कहा जाता था।⁹ राष्ट्र का सम्पूर्ण प्रशासन राजा के अधीन था परन्तु राजा अकेला सम्पूर्ण प्रशासन का कार्यभार नहीं संभाल सकता था अतः राजा नगर में 'सवार्थ चिन्तक' नामक बड़े अधिकारी की नियुक्ति करता था जो प्रजा की सेवा करते हुए उनकी रक्षा के निमित्त किए गए कार्यों का उत्तरदायी होता था।¹⁰

राष्ट्र की रक्षा के लिए प्राचीनकाल में दुर्ग निर्माण किया जाता था। प्राचीन युद्ध परम्परा तथा उत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण राज्यतत्वों में राजधानी और दुर्ग को अतिमहत्ता प्रदान की गई है। राजधानी देश की सम्पत्ति का दर्पण कही जाती है, यदि वह ऊँची भित्तियों के द्वारा सुदृढ़ नहीं होगी तो सुरक्षा संभव नहीं हो सकेगी। मनु के अनुसार सम्पूर्ण दुर्गों में पर्वतश्रृंखला दुर्ग श्रेष्ठ है अतः सर्व प्रयत्नों के द्वारा इसका आश्रय करना चाहिए क्योंकि यहाँ सर्वाधिक गुण और सुरक्षा होती है।¹¹ दुर्ग निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है कि जैसे दुर्गवासियों को प्रताड़ित करने में शत्रु सफल नहीं होते उसी प्रकार दुर्गाश्रित राजा को भी शत्रु मारने में सफल नहीं होते हैं। दुर्ग के मध्य स्थित एक धनुर्धर सैकड़ों योद्धाओं के साथ युद्ध में सफलता प्राप्त कर सकता है तथा दशसहस्राधिक योद्धाओं के साथ युद्ध कर सकता है, अतः दुर्गनिर्माण राजा के लिए आवश्यक होता है।¹² प्राचीन काल में धान्वदुर्ग (जलविहीन, विस्तृत भूमि), महीदुर्ग (स्थल दुर्ग प्रस्तर खंडों वा ईंटों से निर्मित हो), जलदुर्ग (चतुर्दिक जल से आवृत हो), वार्क्षदुर्ग (जिसके चारों ओर कण्टक युक्त, दीर्घाकार वृक्ष, कण्टक-गुल्म आदि हो), नृदुर्ग (जो चतुरंगिणी सेना से सुरक्षित हो), गिरिदुर्ग (पर्वत के मध्य भाग में स्थित दुर्ग, जिसमें कठिनाई से आरोहण हो सके तथा जिसमें एक ही संकीर्ण मार्ग हो) आदि अनेक प्रकार के दुर्गों का निर्माण किया जाता था।

शासन व्यवस्था के संचालन में कोश का स्थान महत्वपूर्ण माना गया है। राजकोष के विषय में प्राचीन ग्रन्थों में अनेकशः वर्णन किया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लिखित है कि जिस राजा का राजकोष रिक्त होता है वह नगरवासियों और ग्रामवासियों चूसता है राज्य के सभी कार्य और व्यापार कोश पर आश्रित होते हैं, अतः राजा को चाहिए कि वह सर्वप्रथम कोश के विस्तार के विषय में चिन्ता करें।¹³ कोश से ही प्रजारक्षण और प्रजारंजन आदि का सम्पादन संभव हो पाता है। मनु कहते हैं कि जैसे भ्रमर धीरे-धीरे अपने भोजन को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राजा भी थोड़ा-थोड़ा करके राष्ट्र से वार्षिक कर ग्रहण करे। पशु और सुवर्ण आदि के लाभ का पंचम भाग, धान्य आदि का अष्टम, षष्ठ या द्वादश भाग (उत्पादन और श्रम को देखकर) राजा कर रूप में ग्रहण करें। वृक्ष, माँस, मधु, घृत, गन्ध, औषधि रस, पुष्प, मूल, फल, पत्र शाक, तृण, चर्म आदि का तथा मृद्, पाषाण निर्मित वस्तुओं का षड्भाग कर के रूप में ग्रहण करें।¹⁴ वसिष्ठ धर्मसूत्रों में कर से मुक्त लोगों का वर्णन प्राप्त होता है—जिसका खेत जलविहीन हो, जिसकी फसल बाढ़ से प्रभावित हो, जिसका अन्न और द्रव्य चोरों द्वारा चुरा लिया गया हो अनाथ, सन्यासी, बच्चे, बूढ़े, ब्रह्मचारियों को दान देने वाले, विधवा आदि से राजा को कर नहीं लेना चाहिए।¹⁵ मनु ने राजकीय कोशवृद्धि के विषय में कहा है कि

पृथ्वी में छिपा हुआ धन यदि कोई भी प्राप्त करता है तब धन का अर्धभाग ब्राह्मणों को प्रदान करे तथा अर्धभाग राजकोश में स्थापित करे। जो धन चोरों से प्राप्त होता है वह धन भी राजकोश में स्थापित करे अथवा उस धन को उसके मालिक को समर्पित कर दे।¹⁶ इस प्रकार कोशवृद्धि के लिए मनु ने विस्तार से अपने विचारों को विवेचित किया है।

दण्ड के विषय में प्राचीन ग्रन्थों में सेना शब्द प्राप्त होता है। ऋग्वेद में दण्ड शब्द सेना, अस्त्र-शस्त्र, युद्ध आदि के विषय में प्रयुक्त हुआ है। देश में आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं से रक्षा के लिए तथा प्रजा संरक्षणार्थ सेना रखना अत्यावश्यक होता है। ऋग्वेद में धनुष, बाण, कवच, तूणीर, सारथी, अस्त्रों और रथों आदि युद्ध सामग्री का विशद वर्णन प्राप्त होता है।¹⁷ अथर्ववेद में सीसे के किसी हथियार का वर्णन है—यदि तुम हमारी गाय या अश्व या पुरुष को मारोगे तो हम लोग सीसे (हथियार) से भोंक देंगे और तुम हमारे शक्तिशाली सैनिकों को मारना बंद कर दोगे।¹⁸ स्मृतिकार राजा को परामर्श देते हुए कहते हैं कि राजा को प्रतिदिन सेना का निरीक्षण करते हुए सेनापतियों के साथ विचार विमर्श करते रहना चाहिए।¹⁹ प्राचीन भारतीय राजाओं में एकराष्ट्र बनने का लक्ष्य प्रमुख था। उनकी इसी प्रवृत्ति के कारण शत्रु से युद्ध करते हुए अपने प्राणों का त्याग कर देना वे अपना धर्म समझते थे। स्मृतियों में अनेक स्थलों पर कहा गया है कि युद्ध करना और विजय प्राप्त करना ही क्षत्रिय राजाओं का धर्म हैं।²⁰

शत्रु को पराजित करने अथवा शत्रु से अपनी रक्षा करने हेतु एक राजा अपने समान अथवा अपने से अधिक शक्तिशाली राजा से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करता था। दूसरे शब्दों में इसे शक्ति संतुलन का सिद्धान्त कहा जाता था। इससे अन्तर्गत अपने राज्य के आसपास और दूरस्थ राज्यों से राजनैतिक सम्बन्ध बनाये जाते थे। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्वहन में मित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुस्मृति में कहा गया है कि राजा सुवर्ण, भूमि को प्राप्त करके समृद्धशाली नहीं होता परन्तु सद्मित्र को प्राप्त करके अतिसमृद्धशाली हो जाता है, क्योंकि भविष्य में वह शक्ति सम्पन्न हो जायेगा। एक दुर्बल मित्र भी श्लाघनीय होता है यदि वह गुणवान् हो, उसकी प्रजा संतुष्ट होती है तथा वह दृढ़प्रतिज्ञ हो जाता है।²¹ मनु ने मित्र बनाते समय सावधानी रखने की बात कही है। उनके अनुसार ऐसे मित्र से सदा सावधान रहना चाहिए जो छिपकर शत्रु राजा का कार्य करे, जो कभी विरक्त होकर साथ छोड़कर चला जाए, अनायास ही वापस आ जाए, ऐसे मित्र कष्टदायक शत्रु की भाँति होते हैं।²²

इस प्रकार ज्ञात होता है कि अतिप्राचीनकाल में स्वर्णयुग था, लोग नीतियुक्त आचरण करते थे, बाद में अनेक जीवन में स्वार्थ प्रवेश कर गया। इसी कारण विद्वानों तथा राजाओं ने नियमों का निर्माण किया और न्याय-नियमों का प्रचलन हुआ।

मेवाड़ के शिलालेखों में राजनैतिक चिन्तन

मेवाड़ में भी प्राचीन राजनैतिक संस्थिति के समान ही राज्य सात अंगों से मिलकर बना था। मेवाड़ के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ पर भी राज्य के सात अंग पूर्ण रूप से विद्यमान थे जो एक-दूसरे के सहयोगी, सहायक और पूरक थे। राष्ट्र या जनपद का मुखिया राजा ही था। राजा का पद वंश-परम्परागत होता था। मेवाड़ के इन शिलालेखों में यहाँ के महाराणाओं की वंशावलियाँ प्राप्त होती हैं इससे गुहिल्य वंश के इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। जैसे—संवत् 1331 वर्ष में लिखी हुई चित्तौड़गढ़ पर महासती स्थान के दरवाजे (रसिया की छत्री) की प्रशस्ति में बप्पा से लेकर नरवर्मा तक के राजाओं का उल्लेख है। विक्रम संवत् 1708 वर्ष में उत्कीर्ण जगन्नाथराय के मन्दिर की प्रशस्ति में राणा नरपति से लेकर महाराणा जगत्सिंह तक के महाराणाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। इस प्रकार मेवाड़ के महाराणाओं में ज्येष्ठ पुत्र का

राज्याभिषेक किया जाता था। यहाँ के महाराणा उच्च आदर्शों से युक्त थे। वे प्रजा के रक्षण, पालन तथा लोककल्याणकारी कार्यों में रत रहते थे। मेवाड़ के एक प्राचीन लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ पर सिद्धराज नामक राजा हुए जिन्होंने बंधुवर्ग तथा स्वयं के द्वारा उपभोग करके बचे हुए धन को याचकों को दे दिया।²³ यहाँ की धरती पर खुम्माण का पुत्र अल्लट हुआ जिसने कभी युद्ध में पीठ नहीं दिखाई, प्रतिस्पर्धियों से कभी झूठ नहीं बोला, मनुष्यों के वचनों को नहीं तोड़ा, परस्त्रियों के प्रति नहीं देखा, त्रैलोक्य के जनों को आश्रय और मुक्ति प्रदान करने वाला था। अल्लट का ही पौत्र शक्तिकुमार राजा को याचकों को दान करने से कर्ण के समान कहते थे, पराक्रम और सत्व की अधिकता के कारण शत्रुवीर उसे पार्थ समझते थे, मर्यादा ओर धैर्य के कारण गुहिल लोग उसे रत्नाकर कहते थे, महिमा के आश्रय के कारण विद्वान् उसे सुमेरु पर्वत कहते थे। उसी का पुत्र आम्रप्रसाद नामक राजा परशुराम के समान घमण्डी क्षत्रियों का संहार करने वाला, वृहस्पति के समान नीतिमार्ग का अनुसरण करने वाला, शिवि के समान त्रस्त जीवों का उपकार करने वाला था।²⁴ इसी धरा पर हम्मीर राजा हुए जिसने सहस्र गायों का दान किया। वह वीर तथा युद्ध के आँगन में धीर था, वाणी की माधुरी से मयूर और तोते की ध्वनि को भयभीत करने वाला था, उसके हाथ में विद्यमान कृपाण शत्रुओं के प्राणों के पवन के आहार से सन्तुष्ट होती हुई, काली काल-सर्पिणी की भाँति चमकती थी। हम्मीर के पुत्र राजा क्षेत्रसिंह की दान की कथा ने स्वर्ग में जाकर चिन्तामणि और कामधेनु के आख्यान पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। राजा क्षेत्रसिंह का पुत्र लक्षसिंह था जिसने याचकों के उठे हुए स्वर को दान से शान्त कर दिया, शरणागत व्यक्तियों की रक्षा के लिए पाषाण की सीमा बना दी, सीमाओं पर भयंकर योद्धाओं को खड़ा कर दिया। इसने बार-बार बिना छल के दान देकर गया तीर्थ को कर से मुक्त कर दिया। यह तीर्थों से कर वसूल कर विधिपूर्वक धन इकट्ठा करता तथा तथा तीर्थों के तालाबों में बड़े-बड़े पत्थर लगवाता था। दान देकर प्रशंसा नहीं करता था। पात्र का प्राप्त करके प्रसन्नतापूर्वक तुला पर स्वर्ण का आरोपण करता था। उस राजा लक्षसिंह का पुत्र मोकल था जो कामदेव के समान सुन्दर, गुरुओं के प्रति विनयी, अच्छा विद्वान था, जो शक्ति से पर्वतों को विदीर्ण कर देता था।²⁵ कलिग्रस्त पृथ्वीतल पर जिसने ब्राह्मणों को कम वृत्ति के कारण हल चलाते हुए देखकर और यह जानकर कि उनकी वृत्ति अपर्याप्त है, उन्हें अंगों सहित वेद पढ़ाने की व्यवस्था की। उसने ऋणमोचन और पापमोचन तीर्थों का निर्माण किया। संसार में प्रसिद्ध अलंकार स्वरूप सेतुमण्डन नामक सुन्दर कुण्ड का निर्माण करवाया। इसके शासन काल में अंगदेश के निवासी भंग हो गए और स्मृतिवन में वृक्ष बन गए। कामरूप (असम) के निवासियों को इसने रूपरहित बना दिया। बंग के रहने वाले लोगों ने गंगा की शरण ले ली और अपने विरुद्धों को त्याग दिया। निषाद और चीन के निवासी दुखी हो गए। तलवार को बाहर निकालने वाले मोकल के भय से तुरुष (तुर्की) सूख गए। बहुत अधिक शौर्य के कारण अग्नि में इसने शत्रु के रक्त का जल दिया।²⁶ इस राजा मोकल के शासन काल में कामधेनु कोशालय में घूमती थी, आंगन में कल्पवृक्ष था, चिन्तामणि बिना किसी प्रयास के सचिवों के पास निवास करती थी। अकूप्य धनराशि को प्राप्त कर यह मोकल राजा इसमें अपनी इच्छित राशि प्राप्त करता था। प्रतिदिन कवियों के समीप ही सोता था। इस राजा मोकल के पुत्र महाराणा कुंभा ने पृथ्वी पर शत्रु-राजाओं को शरीर रहित कर दिया। बिल में सोने पर शत्रु-समूह की युद्ध के यज्ञ-कुण्ड में आहुति दे दी। इसने सात तालाब खुदवाये। अपनी किरणों के जाल से चकवा-चकवी को शोकरहित किया। इसने मदमत्त मालव के राजा के मस्तक पर पैर रखकर, युद्ध में सारंगपुर को पुरनिवासी के साथ जला दिया। राजा कुंभकर्ण ने लोगों को अपार आनंद देने वाले कल्याणकारी रामकुण्ड को खुदवाया। राजा कुंभकर्ण ने गीतगोविन्द नामक प्रबन्ध में अपने मन की चित्तवृत्ति को लगाया। विश्व के उपहार के लिए रस से उल्लसित

संगीतराज नामक शास्त्र की रचना की। महाराणा कुंभा के पुत्र रायमल्ल दाडिमपुर के युद्ध में बाणों की वर्षा की। शत्रु रूपी राजा के मूल को उखाड़ दिया। वह राजा शत्रु-राजाओं को तीव्र ताप देने वाला, तीष्ण द्युति वाला, अपनी किरणों से अंधकार रूपी दुष्टों को दूर करने वाला था। शिव और मनु के मन के अनुकूल चलने वाला था। राजा रायमल्ल ने यंत्रों से युक्त, हलों को चलाने से विचलित, दन्तावलि से व्याकुल, हाथियों, घोड़ों और ऊँटों की आवाज से युक्त, तुमुल (तेज) आवाज से गयासुद्दीन नामक शक राजा के गर्व को गलाते हुए कमजोर किया। जिसने हाटक वंश की हवि को क्रोध की अग्नि में आहुति दे दी। इसने रामा नामक तालाब का विस्तार किया। शंकर नामक महान् सरोवर खुदवाया। इसने गगनचुम्बी तरंगों वाले सेतू से महान् सरोवर की रचना की। इसने माण्डलदुर्ग (माण्डलगढ़) के शिखर पर, मेदपाट की धरती पर जाफर के परिवार से घिरे हुए, वीरों के समूह से युक्त माण्डलगढ़ को ग्रहण किया। इनके कंठ को काटते हुए धरती पर गिरा दिए। यवनों के कंधों को विदीर्ण करके, खेराबाद के वृक्षों को काटकर, अपने असि-दण्ड से शत्रुओं के वंशजों की तथा मालवा के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। इसने पुत्रहीन व्यक्ति के धन को खजाने में लेने के सिद्धान्त को समाप्त किया। जो भूमि राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को दे दी गई, उसके द्वारा उत्पन्न होने वाली कोई भी वस्तु आपत्काल में भी प्रयोग में नहीं लेने की आज्ञा दी। यवनों द्वारा जिन मंदिरों को तोड़ दिया गया ऐसे मंदिरों को एकलिंग के समान ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला बनाया। यह राजा रायमल्ल पारद (पारा) को अपने लिए नहीं करके दूसरों के लिए करता है। वह धर्म का आचरण करता था।²⁷ राणा रायमल्ल के पुत्र राणा सांगा हुए जो कामदेव के ही अवतार थे। मांडलगढ़ के दुर्ग स्वामी यवन राजा मुजफ्फर को बांधकर जीत लिया। मलेच्छ राजा शम्बर को जीतकर, दुर्जय गुर्जरेश्वर से कीर्तिपूर्वक अभिषिक्त हुआ।²⁸ राणा सांगा के पुत्र उदयसिंह राजा हुए जो सम्पूर्ण विश्व रूपी चक्र का एकमात्र आभूषण था। उस राजा ने उदयपुर का निर्माण करवाया।²⁹ उदयसिंह राजा के पुत्र महाराणा प्रताप हुए जिन्होंने तलवार को अपनी प्रियतमा बनाकर हाथ में लिया। उसके युद्ध में आने पर मानसिंह के साथ आई सेना खण्डित हो गई तथा उल्टी दिशा में भाग गई। इसके बाद अकबर वहाँ पहुँचा और युद्ध किया लेकिन प्रताप को बलशाली समझकर वह आगरा चला गया। अमरसिंह ने खानखाना की स्त्रियों का हरण किया परन्तु महाराणा प्रताप ने उन्हें बहन-बेटियों के समान संतुष्ट कर वापस भेज दिया।³⁰

महाराणा प्रताप के पुत्र राणा अमरसिंह हुए जो हित करने वाले, गुरुओं पर कृपा करने वाले थे। लक्ष्य को भेदने वाले, धनुष के ज्ञाता, ब्राह्मणों के कुल का पालन करने वाले तीर्थ स्वरूप थे। राणा अमरसिंह के पुत्र महाराणा कर्णसिंह हुए जो पृथ्वी कुल के तिलक के समान थे जिन्होंने पृथ्वी के चक्र को क्षोभित करते हुए सेना से युक्त उग्र मलेच्छ राजाओं को तृण मानते हुए क्षुभित कर दिया। सिरौंज नामक नगर को जीतकर, जलाकर दिल्ली के राजा को चकित कर दिया। महाराणा कर्णसिंह से जगत्सिंह राजा हुए जिनकी हुंकार सिंह-समूह को वश में कर लेती थी, आँखों से हाथियों को वश में कर लेता था। पृथ्वी को फाड़ने वाले हाथियों को अपनी आवाज से वश में कर लेते थे। वे हाथ में तलवार नहीं उठाते थे। इन्होंने मांघातृ तीर्थ करने पर स्वर्ण तुला दान की। महाराणा जगत्सिंह चिन्तन से भी अधिक देने वाला है। इन्होंने सप्त समुद्रदान और विश्व-चक्र दान किए।³¹ महाराणा जगत्सिंह ने श्वेत वर्ण का ऊँचा विष्णु का मन्दिर बनवाया। उन्होंने सोने से मढ़े हुए अश्व, कल्पलता तथा एक हजार गायें दान दी। अच्छे गुण वाले पाँच गाँव, वस्त्रदान, धान्य-दान, रत्न-दान आदि मिश्रित दान से ब्राह्मणों को संतुष्ट किया। महाराणा जगत्सिंह ने विहार स्थल रूपसागर का निर्माण किया।³² उसने अपने निवास स्थान में 'मेरूमन्दिर' और पिछोला झील के किनारे 'मोहनमन्दिर' नाम के प्रासाद बनवाये।³³ महाराणा जगत्सिंह के पुत्र राणा राजसिंह हुए जिन्होंने सर्वतुविलास

नामक उद्यान लगवाया। उन्होंने दो सौ पचास पल सोने का बना ब्रह्माण्ड—दान एकलिंग जी में दिया।³⁴ महाराणा राजसिंह के युद्ध के लिए प्रयाण करने पर अंग देश नष्ट—भ्रष्ट हो गया। कलिंग रंगहीन होकर भयभीत हो उठा। बंग दुखी हो गया। उत्कल देश की कलाएँ नष्ट हो गई, मैथिल—देश में शिथिलता छा गई। गौड़ देश का हृदय भय से भर गया। पूर्व देश का अभिमान चूर्ण हो गया। राजसिंह की विजय—यात्रोत्सव में लंका आतंक से व्याकुल हो गई। कोंकण की दिशा रूपी अबला के हाथ कंकण—रहित हो गए। कर्णाटक देश के द्वार बन्द हो गए। मलय काँप उठा, द्रविड़ का स्वामी भाग गया। चोल देश डगमगा गया तथा सेतुबन्ध भय से पताका की तरह काँप उठा। सौराष्ट्र की शासन—व्यवस्था टूट गई, समूचे कच्छ की दशा बिगड़ गई, टट्टा का बाजार उजड़ गया, बलक नष्ट हो गया, कंधार अंधकार से भर गया। दरीबा के लोग नगर छोड़कर कन्दराओं में रहने लगे। मांडल के लोग खुली धरती पर रहने लगे, फूलिया के मनुष्यों के मस्तक धूल में लुढ़क रहे थे। रायला की स्त्रियाँ अपने स्वामियों का अनादर करने लगी। शाहपुरा का सुख नष्ट हो गया, केकड़ी ने दासत्व ग्रहण किया। जहाजपुर चिंतित हो उठा, गौड़ जाति के राजाओं का देश दुःखी हो गया, कच्छवाहों का देश उदास हो गया। रणथम्भौर के लोग रणभूमि में ठिठक गए, फतेपुर के निवासियों का अभिमान चूर्ण हो गया। बयाना के लोगों ने रथों को छोड़ दिया। टोंक, सांभर लालसोट और चाटसू ग्रामों को जीतकर दंडित किया।³⁵ राणा राजसिंह ने बड़ी गाँव में 'जनासागर' नामक तालाब का निर्माण करवाया।³⁶ राजसिंह की उम्र जब बारह वर्ष थी तब विभिन्न गाँवों की सीमा में तड़ाग—निर्माण—योग्य भूमि को देखकर वहाँ जलाशय बाँधने का निश्चय किया तथा राजसमन्द नामक झील का निर्माण करवाया।³⁷ महाराणा राजसिंह से राणा जयसिंह हुए जिन्होंने इस राजप्रशस्ति को उत्कीर्ण करवाया।³⁸ महाराणा जयसिंह ने जयसमन्द झील का निर्माण करवाया। जयसिंह के पुत्र अमरसिंह (द्वितीय) की आज्ञा से प्रेरित होकर रणछोड़ भट्ट ने जयप्रशस्ति की रचना की। जो किन्हीं कारणवश उत्कीर्ण न हो सकी।³⁹ महाराणा जयसिंह का पुत्र राणा अमरसिंह द्वितीय हुए जिन्होंने अमरविलास नामक भवन का निर्माण करवाया, तालाब के भीतर जगमन्दिर नामक महल बनाया मानों समुद्र के बीच चाँदी के पहाड़ हो।⁴⁰ महाराणा अमरसिंह द्वितीय के पुत्र राणा संग्रामसिंह (द्वितीय) हुए जिन्होंने हठपूर्वक शाहपुरा को भंग कर दिया।⁴¹ महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) ने मंगल नाम वाले वैद्य को वस्त्र, हथिनी तथा ग्राम समर्पित किए। पुण्डरीक नामक ब्राह्मण को एक गाँव तथा सफेद घोड़ा चन्द्रग्रहण पर प्रदान किया। देवराम नामक ब्राह्मण को पालकी तथा ग्राम समर्पित किया। महाराणा संग्राम सिंह (द्वितीय) सत्पात्र को प्रतिदिन स्वर्णदान के साथ गाय का दान करता था।⁴² उनसे महाराणा जगत्सिंह (द्वितीय) उत्पन्न हुए जो शत्रुओं के दर्प का दलन करने वाले, उद्दीप्त जागती हुई भुजाओं की अर्गला वाले, अपने धर्म में प्रसन्न रहने वाले तथा सज्जनों को प्रसन्न करने वाले थे।⁴³ इन्होंने जगन्नाथ मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार करवाया। धान्य के तीन—चौथाई रहने पर, पाप की क्षुधा से शुक्ल—पक्ष में लोग मरने लगे तब उसने धरती को खोद करके, तोष और कोष को वितरित कर व्यक्तियों के जीवन के लिए द्रव्य दिया तथा महान् प्रासाद कर्म के छल से उसने अकाल को दूर कर दिया।⁴⁴ महाराणा जगत्सिंह (द्वितीय) के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंह तथा प्रतापसिंह के भोग करके स्वर्ग चले जाने पर उनके पुत्र राणा राजसिंह हुए जो गो तथा ब्राह्मण का पालन करने वाले, धर्म के अवतार गुणों से अलंकृत थे।⁴⁵ महाराणा राजसिंह के पुत्ररहित होने से प्रतापसिंह के भाई अरिसिंह मेवाड़ के शासक बने। महाराणा अरिसिंह शत्रुरूपी मृगों के लिए सिंह के समान एकमात्र क्षत्रिय था। उसका पुत्र भीमसिंह मेवाड़ का शासक बना जो कृष्ण का ही ध्यान करने वाला, पुण्य के लिए धन देने वाला, शास्त्र का अभिमानी, सभा में प्रमाणिक वचन बोलने वाला, कल्पवृक्ष के समान हाथ वाला, मधुर वाणी वाला था।⁴⁶ महाराणा भीमसिंह ने

उदयपुर में भीमपदमेश्वर महादेव के मन्दिर की स्थापना की।⁴⁷ महाराणा भीमसिंह से महाराणा जवानसिंह हुए। दान, कीर्ति और गुणों में जिसके समान कोई नहीं था। इसने गया तीर्थ में अपने पितरों का पिण्डदान किया। विशाल दण्ड (कर) को हटाया। धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति के लिए लाखों रुपये खर्च करते हुए तीर्थ-यात्राएँ की।⁴⁸ इसने बहुत सुन्दर सेतु बड़ी नदी पर बनवाया जो पिछोला के नाम से सुशोभित है।⁴⁹ महाराणा जवानसिंह के पुत्र सरदारसिंह प्रजा का रंजन करने वाले थे। सद्बुद्धि से युक्त, कम बोलने वाले तथा धर्म में लगे हुए थे। उन्होंने भी पितरों की मुक्ति के लिए यात्रा की, गया में होने वाली क्रिया को किया तथा पिता जवानसिंह की प्रतिज्ञा को पूरा किया।⁵⁰ महाराणा सरदारसिंह से राजा स्वरूप सिंह हुए जो नीति के कुपार के रूप में जाने जाते थे। सम्पूर्ण पृथ्वी-तल पर अंग्रेजों के आ जाने पर भी उसने चतुरतापूर्वक प्रजा का पालन करते हुए संधि को स्वीकार नहीं किया। शरण में आए हुए अंग्रेजों की रक्षा की। धर्म का संरक्षण किया। क्षत्रियों के संरक्षण के लिए गोवर्धनपुर बनाया तथा उनका पालन किया। महाराणा स्वरूपसिंह ने अपने नाम से मुद्राएँ टंकित करवाई तथा उसे देश-विदेश में प्रचारित किया। महाराणा स्वरूपसिंह के पुत्र राणा शंभुसिंह हुए जिन्होंने श्रम से थके हुए पथिकों को देखकर, पशु-पालकों को देखकर, कांटो और पत्थरों से युक्त इस भूमि पर स्वच्छ मार्ग बनवाये। इस शंभुराजा ने ग्रन्थों की अलंकार युक्त टीका करवाई। महाराणा शंभुसिंह ने गोकुल चन्द्रमा जी के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई। उन्होंने इस मन्दिर के लिए भूवाड़ा, सामता, कविता नामक दस हजार रुपये की उत्पत्ति करने वाले गाँव को समर्पित किया।⁵¹

इस प्रकार मेवाड़ के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ के महाराणाओं ने जीवन-मरण के संघर्ष में अनेक विधर्मियों को अपने पराक्रम के बल पर धूल चटाकर विजयश्री का वरण किया। मेवाड़ के ये सूर्यवंशी महाराणा गौरव में सर्वोपरि माने जाते हैं। सम्पूर्ण भारत के सभी राजा-महाराजा मेवाड़ के महाराणाओं को शिरोमणि मानकर उनके प्रति पूज्य भाव रखते आए हैं। भारत के कई प्राचीन राज्य लुप्त हो गए और अनेक नए राज्य स्थापित हो गए। भारतभूमि ने अनेक परिवर्तन देखे, मुसलमान के राज्य की प्रबल शक्ति के आगे सैंकड़ों हिन्दू राजाओं ने सिर झुकाकर अपने वंश-परम्परा की मान-मर्यादा को उनके चरणों में समर्पित कर दिया किन्तु एक मेवाड़ का राजवंश ही था जो नाना प्रकार के कष्ट अनेक आपत्तियों को सहकर अपनी मान-मर्यादा, कुल गौरव तथा स्वातन्त्र्यप्रियता के लिए सांसारिक सुख-सम्पत्ति और ऐश्वर्य को न्यौछावर करते हुए अपने अटल पथ से कभी विचलित नहीं हुआ।

राज्य के प्रधान अंग राजा के बाद 'अमात्य' का स्थान आता है। मंत्री, अमात्य और सचिव शासकीय कार्यों में निर्णय लेने एवं उन्हें लागू करने में राजा का सहयोग करते हैं। मेवाड़ के इन शिलालेखों में भी इन प्रधान, अमात्य आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। ये अमात्य, प्रधान आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त थे तथा ईमानदारी से राजा का सहयोग करते थे। महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के मंत्रियों में वरिष्ठ धर्मात्मा बिहारीदास हुए जो सर्वाधिकारी पद पर नियुक्त किए गए थे। शास्त्र के जानकार होने के साथ ही सत्य और धर्म के द्वारा ईमानदारी से बीस को बीस ही करते थे। बिहारीदास राजा की अनुमति से दान करते थे। बिहारीदास के मंत्रियों में मुख्य होने पर तथा संग्रामसिंह राजा के वरिष्ठ होने पर दोनों में अनुकूलता प्राप्त हुई।⁵² महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के शासन काल में हरिजीत नाम का मंत्री अत्यधिक गुणों वाला तथा पुण्यशालियों में श्रेष्ठ था। वह बुद्धिशाली सभी कार्यों को निर्देश मात्र से ही पूरा कर देता था। संग्रामसिंह की माता देवकुमारिका की विश्वासपात्र परिचारिका प्रेमा का पुत्र ऊदा था जो बुद्धि और बल का समुद्र था। वह राजमाता ऊदा से करने योग्य कार्य को कहती थी। वह दक्ष ऊदा भी कर्म के सागर में कुशल तैरने वाला तथा हितकारी बुद्धि वाला था।⁵³

महाराणा जगत्सिंह द्वितीय के शासन काल में कायस्थ देवजित् था जो जगत्सिंह का परम विश्वासपात्र था जिसे अमात्य पद प्रदान किया था। वह प्रेमपूर्वक धर्मनिष्ठ रहते हुए सभी का उपकार करने वाला, मन, वचन और कर्म से प्रेमपूर्वक चित्त वाला था। जो व्यक्ति राजा का अपराध करके, भय से इसकी शरण में आ जाता था। उसे देवजित्, अभय देकर, राजा से सम्मानित वह उसकी रक्षा करता था।⁵⁴

महाराणा अरिसिंह के पुत्र हम्मीर के शासन काल के बाद उसके छोटे भाई भीमसिंह के शासनकाल में विष्णुदत्त नामक अमात्य अद्भूत चित्तवृत्ति वाला था जो अपनी बुद्धि से प्रमत्तों पर भी विजय प्राप्त करने वाला था तथा मोतीराम नामक व्यक्ति राजा के कोठार का सचिव था जो सभी कार्य करने वाला, मान्य, बुद्धिमान तथा सभी सुखों का आलय था।⁵⁵

इस प्रकार मेवाड़ के महाराणाओं के अमात्य सर्वगुणसम्पन्न थे। मेवाड़ के शासकों के इन अमात्यों के अतिरिक्त राजगुरु भी राणाओं को उचित परामर्श देते थे। मेवाड़ में पुरोहितों और राजगुरुओं का भी अत्यधिक सम्मान था। महाराणा मोकल गुरुओं को गरिमा प्रदान करने वाला था।⁵⁶ रायमल्ल के गुरु गोपालभट्ट कामनापूर्ण यज्ञ करने वाले थे जिसके स्वस्तिवाचन से सम्पदाएँ बढ़ती थी, राज्य उन्नत होता था, आपदाएँ एवं शत्रु नाश को प्राप्त होते थे।⁵⁷ महाराणा राजसिंह के नौकाधिरोहण के अवसर पर जब राजसमुद्र में पर्याप्त जल नहीं था तथा आगामी वर्ष में श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं था तब पुरोहित गरीबदास ने वारुण सूक्त का जाप ब्राह्मणों से करवाया। तब इन्द्र ने वर्षा की और राजा का कार्य पूर्ण हुआ।⁵⁸ इसी प्रकार महाराणा राजसिंह के राजसमुद्र निर्माण की इच्छा व्यक्त की तब पुरोहित गरीबदास ने तीन अनुकूलताएँ होने पर ही कार्य को शुरू करने की सलाह दी।⁵⁹ महाराणा राजसिंह के शासनकाल में बादशाहों शाहजहाँ का मंत्री सादुल्ला खान चित्तौड़ पहुँचा तो राजसिंह ने विद्वान् पुरोहित मधुसूदन भट्ट को खान के पास भेजा। तब मधुसूदन भट्ट ने महाराणा के अश्वारोहियों को श्रेष्ठ बताया जिससे शाहजहाँ ने महाराणा को चौदह देश दिलाए। स्वामिभक्त एवं वाक्पटु मधुसूदन ने महाराणा की ऐसी सेवा की।⁶⁰ इस प्रकार मेवाड़ में पुरोहितों एवं राजगुरुओं द्वारा भी राजा को देश के हित के लिए परामर्श दिया जाता था तथा इनकी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा देश की रक्षा की जाती थी। राजा भी इन गुरुओं का अत्यधिक सम्मान करता था। सम्मान के साथ ही उन्हें प्रचुर दान भी करता था। महाराणा लाखा ने झोटिंग नामक ब्राह्मण को पिप्पलीकापुरी उदारतापूर्वक दान की। महाराणा रायमल्ल ने अपने गुरु गोपालभट्ट को थूर नामक गाँव दान दिया जिसमें अच्छे-अच्छे गन्ने उत्पन्न होते थे, सुन्दर मूँग की माला उत्पन्न करने वाला पानी सुलभ था, शाली नामक चावल उत्पन्न होते थे, अच्छे आम उत्पन्न होते थे और पानी में कमल खिलते थे।⁶¹

महाराणा उदयसिंह ने लक्ष्मीनाथ कठौड़ी को भूर वाड़ा गाँव दिया। राणा अमरसिंह ने उन्हें होली नामक ग्राम दिया। लक्ष्मीनाथ के पौत्र कृष्णभट्ट को महाराणा जगत्सिंह ने दो हाथी दिए तथा भैसड़ा गाँव दिया। महाराणा जगत्सिंह ने मधुसूदन शर्मा को आहड़ नामक ग्राम में दो हलवाह जमीन दी।⁶² महाराणा जगत्सिंह द्वारा जगन्नाथ राय मंदिर के निर्माण के अवसर पर उन्होंने कृष्णभट्ट को मणि और सोने से युक्त रत्नधेनु का दान किया।⁶³

महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने पुण्डरीक नामक ब्राह्मण को एक गाँव तथा सफेद घोड़ा दिया। उन्होंने देवराम नामक ब्राह्मण को पालकी तथा हनुमातिय नामक गाँव समर्पित किया। उन्होंने भट्ट कमलकान्त को तिल के ढेर के साथ मोरड़ी नामक गाँव दिया।⁶⁴

महाराणा राजसिंह ने पुरोहित गरीबदास को गुणहंडा और देवपुरा नामक गाँव दिए।⁶⁵

इस प्रकार मेवाड़ के महाराणाओं ने अपने गुरुओं तथा पुरोहितों की पर्याप्त दान दिया।

राज्य के तीसरे अंग के रूप में 'जनपद' आता है। मेवाड़ का प्राचीन नाम 'मेदपाट' है। मेवाड़ की प्रशस्तियों में इसका बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है। चित्तौड़गढ़ की रसिया की छत्री की प्रशस्ति में कहा गया है कि— मंदिर की कन्दराओं से युक्त तीर्थों वाले, मनोहर, अपनी कांति के लावण्य से फैले हुए, स्वच्छ मुक्तामणि के समान तालाबों से, आकाश-केसरी को फैलाने वाले, सुन्दर स्त्रियों से युक्त, सौन्दर्य का एकमात्र निकेतन यह मेदपाट का जनपद है। जिसके घोड़े नाग के समान हैं। मनुष्य गंधर्वपुत्रों के समान हैं, गायें स्वर्ग में उत्पन्न कामधेनू के समान, सुन्दर दृष्टि वाली स्त्रियाँ वाणी की कन्या के समान हैं, शस्त्रधारी योद्धा कामदेव के समान, मन मणि के समान स्वच्छ है। बुद्धिमान मनुष्यों का यह देश स्वर्ग के गर्व को दूर करने वाला है।

इसके नागहृद (नागदा) नाम को अखण्ड पृथ्वी का आभूषण, प्रासाद की पंक्तियों के विभ्रम से शुभ्र कोटिश्री वाले चन्द्रमा का उपहास करता है। प्रौढ़ मुक्तामणि की पृथ्वी की श्री के समान चन्द्रमा के अमृत से उत्पन्न कामदेव की क्रीडा भूमि है। इस पृथ्वी के सौन्दर्य की शोभा से युक्त, अमरपुर को नीचा करते हुए, समृद्धि से इस भूमिखण्ड को ऊँचा करते हुए ऐसे अमरपुर से आकर बप्पा नामक वीतराग शासक ने हारीत ऋषि के चरण-कमलों की उपासना की। एकलिंग की अर्चना तथा हारीत ऋषि की कृपा से बप्पा ने नवीन राज्यलक्ष्मी को प्राप्त किया। उसका पुत्र गुहिल नाम का राजा हुआ जिसके नाम से यह गुहिल्य वंश कहलाया।⁶⁶ राजप्रशस्ति में वायुपुराण के अन्तर्गत एकलिंग माहात्म्य में आई हुई कथा का वर्णन है। आँखों में आँसू भरकर पार्वती नदी से कहती है—“ मैं आज शंकर के वियोग में वाष्प (आँसू) बहा रही हूँ। इस कारण पूर्व प्रदत्त मेरे शाप से तुम वाष्प नामक राजा बनोगे। नागहृद तीर्थ में रहकर शंकर की आराधना करने पर तुम्हें इन्द्र के समान राज्य प्राप्त होगा। तब तुम पुनः स्वर्ग आ सकोगे।” इसके बाद पार्वती चण्ड नामक गण से बोली कि द्वारपाल होकर भी तुमने आज द्वार की रक्षा नहीं की और अपनी मर्यादा को तोड़ा इसलिए तुम मेदपाट में हारीत नामक मुनि बनोगे वहाँ रहकर शंकर की आराधना करने के बाद तुम पुनः स्वर्ग प्राप्त कर सकोगे।⁶⁷ इस प्रकार वाष्प हारीत का शिष्य बना और उसकी आज्ञा से नागहृदपुर में रहकर उसने एकलिंग शिव का अर्चन किया। प्रसन्न होकर शिव ने उसे वरदान दिए कि वह वंश-परम्परा तक चित्रकूट पर शासन करे और उसका वंश बराबर चलता रहे। यह वाष्प आदित्य उपाधिधारी ग्रहादित्य का ज्येष्ठ पुत्र था।⁶⁸ इस प्रकार मेवाड़-प्रदेश पर बाप्पा रावल से लेकर यहाँ के वीर-शासकों ने जीवन-मरण के संघर्ष में अनेक विधर्मियों को अपने पराक्रम के बल पर धूल चटाकर विजयश्री का वरण किया।

राज्य के चतुर्थ अंग के रूप में दुर्ग आता है। विभिन्न प्रकार के दुर्गों में गिरि दुर्ग श्रेष्ठ माना गया है। मेवाड़ के इतिहास में विभिन्न शासकों के द्वारा समय-समय पर दुर्ग निर्माण किया गया। मेवाड़ में 84 दुर्ग हैं। यहाँ के महाराणाओं ने अपने राज्य की रक्षा नीति में दुर्गों के महत्व को समझ कर मेवाड़ पर होने वाले आक्रमणों से रक्षा के लिए दुर्गों का निर्माण करवाया होगा। मेवाड़ की इन प्रशस्तियों में भी यहाँ के दुर्गों का वर्णन प्राप्त होता है। चित्तौड़ की महासतियों में समिद्धेश्वर महादेव के मंदिर में लगी हुई महाराणा मोकल के समय की प्रशस्ति में चित्तौड़ दुर्ग का वर्णन इस प्रकार किया गया है महान् कन्दराओं से गिरा हुआ, दूर से आते हुए गंभीर स्वर से पुष्ट, दूसरे महोदर की भाँति, दूसरे के मन को न जानने वाला, पवित्र कीर्ति वाला यह चित्रकूट नामक पर्वत सुशोभित होता है। जो क्षीरसमुद्र के ऊपर-ऊपर उड़ने वाले राजहंसों के लिए भी अगम्य है, ऐसा चित्रकूट नामक दुर्ग विस्तृत भूमि वाला पृथ्वी का अलंकार है।⁶⁹ दुर्ग-निर्माण परम्परा में महाराणा कुंभा का काल स्वर्ण युग कहा जा सकता है। मेवाड़ के 84 दुर्गों में 32 दुर्ग महाराणा कुंभा द्वारा बनवाये गए। उन्होंने कुम्भलमेरू जैसे विशाल एवं अजेय दुर्ग का निर्माण करवाया। समुद्र तल से 3568 फीट

की ऊँचाई पर स्थित इस दुर्ग की अत्यधिक ऊँचाई को देखते हुए अबुल फजल ने लिखा है कि यह किला इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी नीचे गिर जाती है। कुम्भलगढ़ दुर्ग महाराणा कुंभा की सैन्य नीति का आधार स्तम्भ कहा जा सकता है। इन गिरिदुर्गों के अतिरिक्त मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह द्वितीय ने तालाब के भीतर जगमन्दिर नामक दुर्ग का निर्माण करवाया मानो समुद्र के बीच चांदी का पहाड़ हो।⁷⁰ इसी दुर्ग में महाराणा कर्णसिंह ने शहजादे खुर्रम को शरण दी थी। मेवाड़ के इन दुर्गों के अतिरिक्त कुंभा ने चित्तौड़ के किले पर विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया जो 12 फुट ऊँची और 42 फुट चौड़ी जगती पर निर्मित है। यह नीचे से 30 फुट चौड़ा तथा लम्बाई में 122 फुट है। जो स्थापत्य का अजूब नमूना है। इस प्रकार मेवाड़ की धरा पर अनेक दुर्ग प्राप्त होते हैं।

राज्य के पंचम अंग में कोष आता है। शासन व्यवस्था के संचालन में कोष का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मेवाड़ के महाराणाओं के कोष की आय का प्रमुख साधन कृषि, पशुपालन तथा उद्योग थे। मेवाड़ में आने वाले विभिन्न देशों के व्यापारियों से विभिन्न प्रकार के कर के रूप में राशि ली जाती थी। जो यहाँ के मन्दिरों के रखरखाव में प्रयुक्त होती थी। सारणेश्वर महादेव के मंदिर की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कर्णाटक, मध्यप्रदेश, लाट, टक (पंजाब का एक भूभाग) तथा अन्य स्थानों से आने वाले वणिकों के द्वारा दान देना निर्धारित था। यह दान मंदिरों की आवश्यक सामग्री और रख-रखाव में काम लिया जाता था।⁷¹ मेवाड़ के कोष की आय का साधन यहाँ की खनिज की उपलब्धता भी थी। जगन्नाथराय प्रशस्ति में कहा है कि मेवाड़ी राजाओं के राज्य में धरती खोदने पर पूर्णरूप से चाँदी निकली।⁷² कर-व्यवस्था एवं खनिज सम्पदा के अतिरिक्त यहाँ के महाराणाओं के द्वारा युद्ध में जीते गए शत्रु-राजाओं से दण्ड-स्वरूप धन लिया जाता था जो राजकीय कोष में जाता था। महाराणा जगतसिंह के प्रधान भागचन्द ने जब बांसवाड़ा पर विजय प्राप्त की तब रावल समरसिंह ने दण्ड-स्वरूप दो लाख रुपये देकर महाराणा की अधीनता स्वीकार की। महाराणा राजसिंह के योद्धाओं ने मांडल को अधीन किया तब उन्होंने दण्ड-स्वरूप बाईस हजार रुपये लिए। बनेड़ा के वीरो ने भी महाराणा को कर स्वरूप बीस हजार रुपये दिए। शाहपुरा के वीरों ने दण्ड-स्वरूप बाईस हजार रुपये दिए। महाराणा राजसिंह के प्रधान फतहचन्द ने रायसिंह की तोड़ा नगरी को जीता तब रायसिंह की माता ने साठ हजार रूपयों का दण्ड भरा। इसी प्रकार देवलिया के रावत हरिसिंह ने महाराणा को पचास हजार रुपये देकर अधीनता स्वीकार की।⁷³ इस प्रकार शत्रुराजाओं के दण्ड-स्वरूप लिए जाने वाले धन से भी मेवाड़ के शासकों को राजकीय आय होती थी। धनी व्यक्ति पुत्रहीन होकर मर जाए तो उसका धन राजा के खजाने में आ जाता था। ऐसा अर्थशास्त्र के जानकार विद्वान् कहते हैं। मेवाड़ में भी यही नियम लागू था।⁷⁴

मेवाड़ के महाराणाओं ने इस राजकीय कोष का उपयोग राज्य पर आपत्ति आने पर प्रजाहितार्थ किया। इसका श्रेष्ठ उदाहरण महाराणा जगतसिंह है जिन्होंने मेवाड़ में अकाल पड़ने पर जब शुक्ल पक्ष में लोग मरने लगे तब महाराणाओं ने धरती खोदकर, विशद महल कर्म के छल से उस अकाल को दूर किया तथा तोष और कोष को वितरित कर व्यक्तियों को जीवन के लिए द्रव्य दिया।⁷⁵ मेवाड़ के कोष के समृद्ध होने से यहाँ के महाराणाओं ने लोकहितार्थ अनेक मंदिरों, किलों, सागरों, वापिकाओं, धर्मशालाओं आदि का निर्माण एवं जीर्णोद्धार के कार्य किए।

राज्य को छठे अंग में दण्ड आता है। प्राचीन काल में दण्ड का तात्पर्य सेना, अस्त्र, शस्त्र, युद्ध आदि के विषय में प्रयुक्त होता था। मेवाड़ के महाराणाओं की सेना भी ओज से भरी हुई थी। मेवाड़ के इन शिलालेखों में विभिन्न महाराणाओं की सेना, सेना के अंगों तथा सैन्य-नीति का वर्णन मिलता है। यहाँ के

सूर्यवंशी महाराणाओं ने अपने प्रताप से शत्रु रूपी कीचड़ को सूखा दिया। अपने मुख की श्री को उल्लसित करते हुए दुष्ट खलों का अन्धकार नष्ट हो गया। मेवाड़ के इस गुहिल्य वंश में महाराणाओं की सेना के पास पर्याप्त मात्रा में अश्व तथा हाथी थे। गुहिल-पुत्र राजा भोज के युद्ध के समय प्रयाण के समय घोड़ों के खुरों से उठी हुई धूल अन्तरिक्ष में चली आती है तब ऐसा लगता है जैसे बादल छा गए हो। राजा भोज के तेज दौड़ने वाले घोड़ों की आवाज सुनकर युवतियों के असहज हो जाने पर शत्रु जंगल में चले जाते हैं।⁷⁶ इसी वंश में नरवाहन नामक राजा हुआ जिसकी चलती हुई सेना के खुरों से उठी हुई धूल से कीचड़ ही जहाँ शेष रह गया हो ऐसा समुद्र बन गया है। जो घोड़ों की लार से पूरा भर गया है।⁷⁷ इसी वंश में राणा हम्मीर हुए जिसके घोड़े और मकर के चक्रों से युक्त, चंचल, बलवान जलवाले भारी हाथियों वाले पहाड़ों से युक्त, प्रचुर वीर वाले रत्नों की माला से युक्त, पृथ्वी रूपी समुद्र में उत्पन्न होने वाले इसने युद्ध में विजयप्राप्त कर कर्ण की कीर्ति को सोख लिया।⁷⁸ इसी वंश में महाराणा मोकल की सेना के चमकते हुए घोड़ों के खुरों से उड़ाई हुई हवा से उठी हुई धूल आँखों में व्यग्रता उत्पन्न करती है जिससे सूर्य की आँखें मन्द हो गई है। घोड़ों की गतियाँ मन्द हो गई है, शत्रु की स्त्रियाँ उस दिन से दिन-रात का प्रहर जानना भूल गई।⁷⁹ इसी वंश में महाराणा संग्राम सिंह (द्वितीय) हुए जिनके युद्ध में दक्ष प्रमुख योद्धाओं ने म्लेच्छों के साथ अद्भूत देवासुर की भाँति युद्ध किया। उससे उत्पन्न भूमि का यह अन्तराल जाज्वल्यमान अग्नि की भाँति सुशोभित हुआ। तलवार, बाण, भाले, शक्ति पाश आदि से आकाश सुशोभित हुआ। राजा के योद्धाओं ने म्लेच्छ राजाओं से जयलक्ष्मी को बंदी की तरह ग्रहण किया और युद्ध-भूमि से सभी शिविर आदि उखाड़कर ले आए।⁸⁰ इस प्रकार यहाँ के योद्धा अतुलनीय पराक्रम और वीरता से भरे थे। इसका श्रेष्ठ उदाहरण महाराणा राजसिंह के समय का है। जब शाहजहाँ का मंत्री सादुल्ला खां चित्तौड़ पहुँचा तब महाराणा राजसिंह ने अपने पुरोहित मधुसूदन भट्ट को वहाँ भेजा। खान ने जब राणा के अश्वरोहियों की संख्या पूछी तब पुरोहित भट्ट ने कहा-बीस हजार। तब खान ने भट्ट से कहा कि दिल्लीपति की एक लाख संख्या के सामने महाराणा के बीस हजार की कैसे समता की जाए? तब भट्ट ने कहा कि दिल्लीपति की एक लाख तथा महाराणा राजसिंह के बीस हजार अश्वरोहियों को विधाता ने समान बताया है। इस प्रकार यहाँ के योद्धा अपने तेज और प्रताप में कई गुणा अधिक थे। मेवाड़ी सेना के पास पर्याप्त अस्त्र-शस्त्र थे। इसका भी वर्णन प्राप्त होता है। महाराणा राजसिंह की सेना के पास विद्यमान तोपों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ये सुन्दर तोपें शत्रुओं का संहार करने वाली कलिकाएँ हैं। बगल में रखे हुए गोलों के बहाने इन्होंने मुण्ड-मालाएँ पहन रखी हैं। इन तोपों को मौत की दाढ़े, शत्रुओं के प्राणों का संचय करने वाली कंदराएँ तथा पाताल लोक के घड़ियालों का वक्रमुख कहा है।⁸²

राज्य के अन्तिम तथा सप्तम अंग में मित्र आता है। राज्य की रक्षा के लिए यहाँ के महाराणाओं ने अन्य राज्यों के राजाओं से मित्रता का सम्बन्ध बनाया था। महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के विजयराज्य में राज्यमाता देवकुमारी द्वारा वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय कोटा नरेश भीमसिंह आए। देशान्तर में रहने वाले दूसरे राजा और डूंगरपुर नरेश रावल रामसिंह अपनी सेना के साथ उसे देखने की ईच्छा से आए।⁸³ मेवाड़ के महाराणाओं ने न केवल पड़ोसी राज्यों से मित्रता के सम्बन्ध बनाए अपितु यथा संभव अंग्रेजों तथा मुगलों की भी सहायता की। 1914 विक्रम वर्ष में अंग्रेजों की सेना में युद्ध हुआ तो नष्ट होने से बचे हुए अंग्रेज महाराणा स्वरूपसिंह ने उनकी रक्षा की तथा उनका पालन किया।⁸⁴ इसी प्रकार महाराणा कर्णसिंह ने दिल्लीपति जहाँगीर से विमुख हुए उसके पुत्र खुर्रम को अपने देश में ठहराया तथा जहाँगीर की मृत्यु हो जाने पर साथ में भाई अर्जुन को भेजकर उसे दिल्ली का स्वामी बनाया। खुर्रम

शाहजहाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।⁸⁵ इसी प्रकार महाराणा राजसिंह ने दिल्लीपति औरंगजेब और उसके ज्येष्ठ सहोदर शुजा के बीच भीषण युद्ध होने पर औरंगजेब की सहायता के लिए कुंवर सरदारसिंह को वहाँ भेजा जिसने वहाँ पहुँच कर विजय प्राप्त की। तब औरंगजेब ने उसे देश, अश्व तथा गज प्रदान किए।⁸⁶ इस प्रकार मेवाड़ के महाराणाओं ने दूसरे राज्य के राजाओं, मुगलों तथा अंग्रेजों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करके राज्य को समृद्ध बनाया। साथ ही यहाँ के राजाओं ने अन्य प्रदेशों से मित्रता स्थापित कर व्यापारिक सम्बन्धों के द्वारा भी अपने राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।

इस प्रकार मेवाड़ के इन शिलालेखों में यहाँ की राजनैतिक संस्थिति भी उजागर होती है जिसमें प्राचीन राजनैतिक संस्थिति के अनुसार ही राज्य के सप्तांगों का वर्णन हमें प्राप्त होता है।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद, 4 / 42
2. गौतम धर्मसूत्र 11 / 2 / 4-6
3. कौटिलीय अर्थशास्त्र-6 / 96 / 1
4. मनुस्मृति-9 / 296
5. अथर्ववेद-3 / 4 / 2
6. मनुस्मृति-7 / 60
7. याज्ञवल्क्य स्मृति-1 / 344
8. मनुस्मृति-8 / 22
9. वहीं-7 / 166
10. वहीं-7 / 121
11. वहीं-7 / 89-90
12. वहीं-7 / 91-94
13. कौटिलीय अर्थशास्त्र-2 / 1, 2 / 8
14. मनुस्मृति-7 / 129
15. वसिष्ठ धर्मसूत्र-19 / 15
16. मनुस्मृति-8 / 38-40
17. ऋग्वेद, 6 / 95
18. अथर्ववेद-1 / 16 / 2,4
19. याज्ञवल्क्य स्मृति-1 / 13 / 329
20. मनुस्मृति-7 / 87
21. वहीं-7 / 208
22. वहीं-7 / 186
23. उदयपुर के पूर्व की ओर एक मील फासले पर हरिसिद्धि माता के मन्दिर की सीढ़ियों का लेख।
24. चित्तौड़गढ़ पर महासती स्थान के दरवाजे (रसिया की छत्री) की प्रशस्ति, श्लोक-39,48,50

25. चित्तौड़गढ़ की महासती में समिद्वेश्वर महादेव के मंदिर में लगी प्रशस्ति, श्लोक-14, 18,19,31,36,38,43,44
26. कुंभलमेरु पर मामादेव के मन्दिर की प्रशस्ति के चौथे पाषाण की चतुर्थी पट्टिका, श्लोक-217, 231, 232
27. श्री एकलिंग जी के निज मंदिर में दक्षिणाद्वार के सामने दीवार में लगी प्रशस्ति, श्लोक-45, 49, 51, 56, 59, 64, 65, 67, 68, 74-78, 83, 84, 86, 90
28. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक-38
29. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति श्लोक-33
30. राजप्रशस्ति सर्ग 4 / 31-33
31. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक-41,44,45,62,84,89,120,121
32. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति में मंदिर के वर्णन का श्लोक- 11,17-19,34
33. राजप्रशस्ति सर्ग 5 / 26
34. वहीं, सर्ग 6 / 9,30,31
35. वहीं, सर्ग 7 / 16-23,42
36. वहीं, सर्ग 8 / 47
37. वहीं, सर्ग 9 / 4,7
38. वहीं, सर्ग 5 / 51
39. जयप्रशस्ति, सर्ग 7 / 15
40. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति श्लोक-44-45
41. वहीं, श्लोक-46
42. वहीं तृतीय प्रकरण, श्लोक-3,7,12
43. हरबेन जी के खुरे पर शिवालय की प्रशस्ति, श्लोक-9
44. जगत् शिरोमणि मंदिर की प्रशस्ति-श्लोक-18, 19
45. सूरजपोल दरवाजे के भीतर सन्ध्यागिरि मठ के शिवालय की प्रशस्ति ।
46. उदयपुर में रामप्यारी की बाड़ी के मंदिर की प्रशस्ति-श्लोक-3,4
47. उदयपुर में भीमपद्मेश्वर महादेव के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक-32
48. जगत् शिरोमणि मंदिर की प्रशस्ति-श्लोक-34,36-38
49. गोकुलचन्द्रमा जी के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक-38
50. जगत् शिरोमणि मंदिर की प्रशस्ति-श्लोक-39, 40
51. गोकुलचन्द्रमा जी के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक-41, 43-45, 48, 53, 54, 99
52. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव जी के मंदिर की प्रशस्ति, द्वितीय प्रकरण, श्लोक- 66-69
53. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति, पंचम प्रकरण, श्लोक- 2-5
54. उदयपुर में दिल्ली दरवाजे के पास पंचोलियों के मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक- 15-17
55. उदयपुर में भीमपद्मेश्वर महादेव के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक-39, 40
56. कुम्भलमेरु के मामादेव मंदिर की प्रशस्ति, चतुर्थ पट्टिका, श्लोक-230
57. एकलिंग के निज-मन्दिर में दक्षिणा द्वार के सामने की प्रशस्ति, श्लोक-89

58. राजप्रशस्ति, सर्ग 10, श्लोक-27
59. राजप्रशस्ति,
60. राजप्रशस्ति सर्ग-6, श्लोक-12,13,23
61. एकलिंग जी के मन्दिर में दक्षिणाद्वार के सामने की प्रशस्ति, श्लोक- 39,67,87
62. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति, श्री जगत्सिंह के मांघातृ यात्रा का प्रसंग, श्लोक- 114,115,117,118
63. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक- 40
64. सीसारमा गांव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति, तृतीय प्रकरण, श्लोक- 4,7,9,10
65. राजप्रशस्ति, सर्ग 8, श्लोक-48
66. चित्तौड़गढ़ के महासती स्थान के दरवाजे (सिया की छात्री) की प्रशस्ति, श्लोक- 6-13
67. राजप्रशस्ति, सर्ग 1 / 19-24
68. वहीं, तृतीय सर्ग / 8-10
69. वीर विनोद भाग-1, चित्तौड़ की महासतियों में समिद्धेश्वर महादेव के मंदिर में लगी हुई मोकलकालीन प्रशस्ति-श्लोक 65,69
70. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति श्लोक-45
71. सारणेश्वर महादेव के मंदिर की प्रशस्ति।
72. जगन्नाथराय मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक-39
73. राजप्रशस्ति सर्ग 5 / 28,7 / 26-29,8 / 14,15
74. श्री एकलिंग के मंदिर में दक्षिणाद्वार के सामने की प्रशस्ति-श्लोक-84
75. जगत्शिरोमणि के मंदिर की प्रशस्ति,श्लोक-19
76. चित्तौड़ के महासती स्थान के दरवाजे की प्रशस्ति-श्लोक-16,17
77. वहीं, श्लोक-43
78. श्री एकलिंग के दक्षिणाद्वार के सामने की प्रशस्ति-श्लोक-25
79. चित्तौड़ की महासतियों में समिद्धेश्वर महादेव की प्रशस्ति, श्लोक-55
80. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव मंदिर की प्रशस्ति, श्लोक-57,58,61
81. राजप्रशस्ति, सर्ग 6 / 18-21
82. वहीं, सर्ग 7 / 3-4
83. सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ महादेव के मंदिर की प्रशस्ति, पंचम प्रकरण, श्लोक-15,16
84. गोकुलचन्द्रमा मंदिर की प्रशस्ति-श्लोक-44
85. राजप्रशस्ति सर्ग 5 / 13, 14
86. वहीं, सर्ग 8 / 5-7

उपनिषदों में वाक् तत्त्व का स्वरूप

डॉ. भोला नाथ

असि.प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गनपत सहाय पी.जी. कालेज, सुल्तानपुर, उ.प्र.

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 15-18

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 20 July 2022

Published : 04 August 2022

शोध-सारांश : उपनिषद् ऋषियों ने वाक् को ज्ञान के साधन के रूप में देखा है। जो दीपक की तरह अर्थ को प्रकाशित करती है और स्वयं भी प्रकाशित होती है। भर्तृहरि वाक् को एक तत्त्व के रूप में देखते हैं तथा पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी रूप वाक् को तीन स्तरों में विभाजित करते हैं। वाणी सीमित अर्थ को प्रकाशित कर सकती है लेकिन असीमित ब्रह्म को प्रकाशित नहीं कर सकती है। इस प्रकार वाक् तत्त्व प्रकाश का ही दूसरा रूप सिद्ध होती है। उपनिषद् ऋषि वाक् को अचेतन तो भर्तृहरि ने शब्द को ब्रह्म कहकर चेतन रूप माना है। भर्तृहरि के अनुसार शब्दब्रह्म रूप परावाक् से चेतनवत् होकर हो पश्यन्ती आदि वाक् विषय को प्रकाशित करती हैं।

मुख्य शब्द : उपनिषद्, वाक्, पश्यन्ती, वेदान्तसार, ब्रह्म, प्रश्नोपनिषद्, वाक्यपदीय आदि।

सभी दर्शनों में वाक् को एक कर्मेन्द्रिय के रूप में माना गया है। सांख्य दर्शन के अनुसार अहंकार से पञ्चतन्मात्रा और एकादश इन्द्रियों की अभिव्यक्ति होती है।(1) एकादश इन्द्रियों में पञ्चज्ञानेन्द्रियां, पञ्चकर्मेन्द्रियां और मन है। पञ्चकर्मेन्द्रियों में वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ हैं। इस प्रकार वाक् एक कर्मेन्द्रिय के रूप में वर्णित है। इसी प्रकार योग दर्शन और अद्वैत वेदान्त ने भी वाक् को एक कर्मेन्द्रिय के रूप में माना है। व्याकरण दर्शन वाक् को एक तत्त्व के रूप में वर्णित करता है और उस वाक् तत्त्व के तीन रूप मानता है- पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी।(2) भर्तृहरि के बाद के आचार्यों ने परा वाक् को वाणी का चौथा रूप माना है जो कि अनिर्वचनीय रूप है।

इसी प्रकार उपनिषदों में भी वाक् का वर्णन कई रूपों में मिलता है, जो कि वाक् के स्वरूप को दर्शाता है। किसी वस्तु का स्वरूप उस वस्तु की विशेषता को दर्शाता है या यों कहें कि किसी वस्तु की विशेषता उस वस्तु के स्वरूप की ओर इंगित करती है। विशेषण यद्यपि स्वरूप को दर्शाता है, किन्तु ये दोनों शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं कहे जा सकते। इन दोनों में अन्तर होता है। विशेषण एकांगिक होता है, जबकि स्वरूप तात्त्विक होता है। विशेषण भाषा पर आश्रित होता है। स्वरूप अनिर्वचनीय होता है। किसी वस्तु की कितनी भी विशेषता हम दें किन्तु उन विशेषताओं से वस्तु के स्वरूप का बोध नहीं हो सकता, 'किसी वस्तु के अनेक गुण होते हैं जो व्यक्ति एक वस्तु के सभी गुणों को जान जाता है वह सभी वस्तुओं के सभी गुणों को जान जाता है'।(3)

वेदान्तसार में 'सच्चिदानन्द' की व्याख्या में कहा गया है कि सत्, चित् और आनन्द ब्रह्म के विशेषण नहीं हैं। अपितु वस्तु के स्वरूप ही हैं, अर्थात् सत् ही ब्रह्म है, चित् ही ब्रह्म है और आनन्द ही ब्रह्म है। एक दृष्टि से वह ब्रह्म सत् है दूसरी दृष्टि से

चित् रूप और तीसरी दृष्टि से आनन्द रूप।(4) इस प्रकार इस व्याख्या से हम विशेषण और स्वरूप को एक नहीं कह सकते हैं। किन्तु इतना निश्चित है कि विशेषणों का प्रयोग करके उस वस्तु के अनिर्वचनीय स्वरूप की ओर इंगित कर सकते हैं।

इस प्रकार उपनिषदों में वाक् तत्त्व के विषय में जो कुछ कहा गया है, वह वाक् तत्त्व के स्वरूप की ओर संकेत करता है। वाक् के बैखरी रूप को वाणी कहा जाता है। यह वाणी निर्बल और सबल दो प्रकार की हो सकती है। निर्बलवाणी प्रभावहीन होती है तो सबल वाणी सबको प्रभावित करने वाली होती है। इसीलिए केनोपनिषद् के शान्तिमन्त्र में ऋषि वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र आदि इन्द्रियों के पुष्ट होने की प्रार्थना करते हैं- ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्-प्राण-चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि॥ केनोपनिषद् शान्ति पाठ॥(5)

उपनिषद् कहती है कि वाणी स्वभावतः निष्प्राण होती है। स्वतः किसी कार्य में संलग्न नहीं हो सकती है। जिस प्रकार अचेतन शरीर चेतन जीवात्मा से चेतनवत् होने के बाद कार्य करता है, उसी प्रकार वाणी भी चेतन आत्मा से चेतनवत् होकर ही विषय को प्रकाशित करती है, 'यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते'(6)

उपनिषद् मत में चेतनतत्त्व सिर्फ ब्रह्म है। शेष जगत् माया का कार्य होने से अचेतन है। शरीर भी अचेतन है। शरीर के मन, बुद्धि, वाणी आदि सभी अवयव भी अचेतन ही हैं। लेकिन आत्मा प्रत्यक्ष रूप से वाणी को प्रकाशित नहीं करता है। आत्मा बुद्धि को, बुद्धि मन को, मन जठराग्नि को, जठराग्नि प्राण को प्रेरित करता है। फिर प्राण से प्रेरित होकर वाणी उत्पन्न होती है। ऐसा ही निर्देश पाणिनीय शिक्षा में किया गया है।(7)

चूंकि वाणी एक कार्य है। कार्य होने से एक सीमित तत्त्व है। दीपक की तरह वाणी भी स्वयं प्रकाशित होती है और विषय को भी प्रकाशित करती है। लेकिन यह वाणी एक सीमित विषय को ही प्रकाशित कर सकती है। असीमित ब्रह्म तत्त्व को नहीं। न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्वो न जानीमो यथैतदनुशिष्यात्।(8) यहाँ वाणी को ज्ञान के एक साधन के रूप में दिखाया गया है किन्तु वह ब्रह्म का ज्ञान कराने में असमर्थ है।

'यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युदिते'(9) अर्थात् जो वाणी से प्रकाशित नहीं है किन्तु जिससे वाणी प्रकाशित है। वाणी से प्रत्येक कार्य का ज्ञान हो सकता है। सभी कार्य सीमित होने से वाणी से प्रकाशित किये जा सकते हैं। लेकिन आंशिक रूप से ही, संपूर्णता में नहीं; क्योंकि किसी भी वस्तु को संपूर्णता में सिर्फ अनुभव से जाना जा सकता है। वस्तु का तात्त्विक साक्षात्कार से अनुभव होता है। इस प्रकार अनुभव से उसे संपूर्णता में जाना जा सकता है। लेकिन ब्रह्म को वाणी के द्वारा आंशिक रूप से भी नहीं जाना जा सकता है उसे खण्डों में नहीं जाना जा सकता है। अंशों में नहीं जाना जा सकता है क्योंकि ब्रह्म अखण्ड रूप है, 'अखण्डं सच्चिदानंदमवाङ्मनसगोचरं'(10) इसीलिए कहते हैं कि ब्रह्म का एक झलक भी मिल जाय तो संपूर्णता में उसका ज्ञान हो जाता है।(11)

वाणी, मन और चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रियां प्राण से नियंत्रित होते हैं। इनका अनन्तिम कारण प्राण प्रतीत होता है। प्राण के नियंत्रित होने पर वाणी, मन आदि स्वतः नियंत्रण में आ जाते हैं। इसीलिए योगी अपने प्राण को नियंत्रित करके मन और वाक् को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। इसी भाव को व्यक्त करते हुए प्रश्नोपनिषद् में कहा गया है कि जिस प्रकार मधुकर राज के ऊपर उठने पर सभी मक्खियाँ ऊपर चढ़ने लगती हैं और उसके बैठ जाने पर सभी बैठ जाती हैं उसी प्रकार वाक्, मन, चक्षु और श्रोत्रादि प्राण के उठने पर ऊपर उठने लगती हैं तथा बैठने पर शान्त हो जाती हैं। 'तद्यथा मक्षिका मधुकरराजानमुत्क्रामन्त सर्वा एवोत्क्रामन्ते तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रतिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रं च ते प्रीताः प्राणं स्तुवन्ति॥'(12)

वेद को ब्रह्म की वाणी बताया गया है, 'अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यो दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः। वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथ्वी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा॥'(13) अर्थात् अग्नि जिसका मस्तक है चन्द्रमा और सूर्य नेत्र हैं। दिशायें कर्ण हैं। प्रसिद्ध वेद वाणी है। वायु प्राण है, सारा विश्व जिसका हृदय है, और जिसके चारों ओर पृथ्वी प्रकट हुई है। वह देव सम्पूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है। जिस प्रकार ब्रह्म त्रैकालिक सत्य है, उसी प्रकार ब्रह्म की वाणी रूप वेद भी त्रैकालिक सत्य है। तीनों कालों में वेद वचन सत्य रूप हैं। इस प्रकार वेदों को आज भी प्रासंगिक माना जाता है।

वाक्यपदीय में भर्तृहरि ने वाणी के तीन रूप माना है। पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। बाद के वैयाकरणों ने परा वाणी को भी माना है। उनका कहना है कि भर्तृहरि परा वाणी को मानते हैं लेकिन शब्दों में उसका कथन नहीं किया है; क्योंकि वह अनुभव रूप है। उपनिषद् में एक स्थान पर अक्षर ब्रह्म को वाक् रूप बताया गया है, 'तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः'(14) अर्थात् वही यह अक्षर ब्रह्म है। वही प्राण है तथा वही वाक् और मन है। संभवतः परा वाणी को ही यहां ब्रह्म के तुल्य बताया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपनिषदों में वाणी को ज्ञान के एक साधन के रूप में देखा गया है। यद्यपि ज्ञान का साधन पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और वाक् को कर्मेन्द्रिय के रूप में रखा गया है। फिर भी वाणी शब्द प्रमाण के रूप में वस्तुओं का ज्ञान कराती है। वाणी ज्ञान का साधन होते हुए भी ब्रह्म का ज्ञान कराने में असमर्थ है।

वाक् के वैखरी रूप को वाणी कहा जाता है। यह वाणी निर्बल और सबल दो प्रकार की हो सकती है। निर्बल वाणी प्रभावहीन होती है तो सबल वाणी सबको प्रभावित करने वाली होती है। वाणी स्वभावतः निष्प्राण होती है। स्वतः किसी कार्य में संलग्न नहीं हो सकती है। जिस प्रकार अचेतन शरीर चेतन जीवात्मा से चेतनवत् होने के बाद कार्य करता है, उसी प्रकार वाणी भी चेतन आत्मा से चेतनवत् होकर ही विषय को प्रकाशित करती है।

वाणी एक कार्य है। कार्य होने से एक सीमित तत्त्व है। दीपक की तरह वाणी भी स्वयं प्रकाशित होती है और विषय को भी प्रकाशित करती है। लेकिन यह वाणी एक सीमित विषय को ही प्रकाशित कर सकती है। असीमित ब्रह्म तत्त्व को नहीं।

वाणी से प्रत्येक कार्य का ज्ञान हो सकता है। सभी कार्य सीमित होने से वाणी से प्रकाशित किये जा सकते हैं। लेकिन आंशिक रूप से ही, संपूर्णता में नहीं; क्योंकि किसी भी वस्तु को संपूर्णता में सिर्फ अनुभव से जाना जा सकता है। वस्तु का तात्त्विक स्वरूप साक्षात्कार से अनुभव होता है। इस प्रकार अनुभव से उसे संपूर्णता में जाना जा सकता है। लेकिन ब्रह्म को वाणी के द्वारा आंशिक रूप से भी नहीं जाना जा सकता है; क्योंकि ब्रह्म अखण्ड रूप है। उसे खण्डों में नहीं जाना जा सकता है। वाणी की अपनी अलग से कोई सत्ता नहीं है। अपितु विवर्त रूप होने से वाक् का पारमार्थिक रूप या मूल स्वरूप ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

संदर्भ

1. सांख्यकारिका-22, आचार्य जगन्नाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, संस्करण-5
2. वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, कारिका-133
3. जैन दर्शन
4. वेदान्तसार-1, सदानंद, व्याख्याकार- आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
5. केनोपनिषद्, शान्ति मंत्र
6. केनोपनिषद्-1.4
7. पाणिनीय शिक्षा, श्लोक -6

8. केनोपनिषद्, खण्ड1.3-4
9. केनोपनिषद् 1.4
10. वेदान्तसार-1
11. ईशावास्य उपनिषद्, ओशो, पीडीएफ, पृष्ठ-3
12. प्रश्नोपनिषद्-2.4
13. मुण्डकोपनिषद् 2.1.4
14. मुण्डकोपनिषद् 2.2.2



केदारनाथ सिंह की कविताओं में प्रकृति प्रेम

ओम प्रकाश वत्स

शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 19-23

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 05 July 2022

Published : 30 July 2022

सारांश –

केदारनाथ सिंह जी ने काव्य और प्रकृति का अत्यंत ही सहज एवं आत्मीय संबंध स्थापित किया है। प्रकृति ने कवि की सर्जनात्मकता और संवेदनशीलता का तीव्र भाव मुखर एवं सजीव बनाया है। ये ग्रामीण परिवेश तथा स्वस्थ मानवीय संवेदना लेकर उठने वाले कवि हैं।

शब्दकुंजी –

सर्जनात्मकता – सृजन की योग्यता

संवेदनशीलता – अति संवेदनशील होने की अवस्था

तीक्ष्णता – पैनापन

समन्वित – समन्वय किया हुआ

दुपहरिया – दोपहर का समय

प्रभावाभिव्यंजना – विचारों को अभिव्यक्त करने की कला

सार्थकता – सार्थक होने का भाव

दुर्लभ – कठिन

अधिकाधिक – अधिक से अधिक (अत्यधिक)

रहस्यमय – रहस्य से भरा हुआ

भावानुभूति – भाव की अनुभूति?

परिचय –

केदारनाथ सिंह जी प्रकृति के गंध, रूप, रस व उसके सौंदर्य के अन्तर्गत जीवन की भावानुभूतियों को बिंबित-प्रतिबिम्बित करते चलते हैं। उनकी रचनाओं में आम के मंजरियों की खुशबू, आहत बादलों की जिजीविषा, ऋतुओं के अलग-अलग गीत की तीक्ष्णता सब समाहित है। कवि प्रकृति में मानवीय जीवन के अलगाव को तोड़कर समन्वित कर देते हैं। कवि प्रकृति और मानवीय संवेदना को एक साथ उजागर करते हैं। एक पीढ़ी जो चुपचाप सहती है, अगली पीढ़ी भी मौन होकर उसे स्वीकार करने के लिए विवश रहती है। इन चुप्पियों को कवि अपनी कविता के माध्यम से तोड़ते हुए दिखते हैं –

“संदेश वाहक मैं तुम्हारी चुप्पियों का हूँ
तुमने जो कहा नहीं
उस पर्वत शब्द को
अनंत तक गुंजा दूँगा”¹

इस कविता में ग्रीष्म की दुपहरिया का चित्रण है। नीम की पत्तियों के झरने के साथ-साथ मन की उदासी बढ़ने लगी। कवि के मन पर ग्रीष्म की दुपहरिया का प्रभाव है। एक उत्तम कोटि की प्रभावाभिव्यंजना इसे कह सकते हैं। दिन के सुनसान प्रहर में जीवन की प्रगति कवि को रूक-सी गयी लगती है। दुपहरिया का थककर रूकना इस बात का सूचक है कि ठिठुरन की रातें बीत तो गयीं लेकिन दर्द वाले दिन आ गए।

कवि अपनी कविता में प्रकृति के ऐसे रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो मधुऋतु के आने के पूर्व प्रकृति में होने वाले विविध परिवर्तनों को सम्यक दृष्टि से उभारने का प्रयास करता है। उदाहरणस्वरूप यह पंक्ति द्रष्टव्य है—

“धूप चिड़चिड़ी, हवा वेहया
दिन मटमैला
मौसम पर रंग चढ़ा फागुनी,
शिशिर टूटते पत्तों में टूटा पलाश-वन पर ज्यों फैला
एक उदासी का नम, शोले चटक घूरते
जिसमें आसमानों से गूँजा हिया आएगा
कल बसंत मन के भावों के गीतकार सा
गा जाएगा सब का सब कुछ।”²

परिणाम एवं विश्लेषण

दरअसल यह पूर्वाभास है, शिशिर के टूटते मौसम पर फागूनी रंग के चढ़ने का। ऋतु परिवर्तन के प्रभाव में मन के भावों को गूँथकर व्यक्त करने की कला कवि को अच्छी तरह मालूम है। ऋतुओं का आगमन अपनी प्रकृति के अनुरूप मन से संतुलन कायम कर लेती है। कवि कहते हैं कि ग्रीष्म उदास है तो कहीं बसंत प्रसन्न है।

कवि अपनी सर्जना की सार्थकता और भिन्न-भिन्न प्रेरणाओं की तलाश प्रकृति के बीच से करते हैं। कवि बस प्रकृति के सौंदर्य को ही नहीं बल्कि प्रकृति के कहर को भी झेलते हैं। प्रकृति चित्रण करते समय उसकी दृष्टि सूक्ष्म संवेदना पर भी केन्द्रित होती है। गाँव का किसान बाढ़ से घिरकर घबराता नहीं है, वह चुपचाप प्रतीक्षा करता है पानी के घटने की। किसान के मन में किसी के प्रति कोई शिकायत नहीं रहती बल्कि नई परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति उनमें बनी रहती है। कवि चिलम के छेद में बची हुई आग से इस ओर इशारा करते हैं –

“मगर पानी में घिरे हुए लोग
शिकायत नहीं करते
वो हर कीमत पर अपनी
चिलम के छेद में
कहीं-न-कहीं बचा रखते हैं
थोड़ी सी आग।”³

आज सुविधाओं के पीछे पड़कर हम अपनी सीमाओं का ध्यान रखना भूल गए हैं। प्रकृति का विनाश करने में हम इस कदर लगे हुए हैं कि आज हमारी प्रकृति हमारे ही हाथों सुरक्षित नहीं है। पशु-पक्षी सुरक्षित नहीं हैं। कवि को डर है कि कहीं हम अपने स्वार्थ के चक्कर में सारी प्रकृति को स्वाहा न कर दें। इस प्रकृति को संकट में डालते-डालते हम अपने अस्तित्व को ही समाप्त न कर दें। उदाहरण के लिए ये पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं –

“पर मुझे एक और भी डर है
बाघ से भी ज्यादा चमकता हुआ
कि हाथ कहाँ होंगे
आँखें कहाँ होंगी जो पढ़ेगी किताबें
प्रेस कहाँ होंगे जो उन्हें छापेंगे
शहर कहाँ होंगे जहाँ ढालेंगे टाइप।”⁴

क्योंकि ये सब मनुष्य के अस्तित्व पर निर्भर करते हैं, जब इन्हें बनाने वाले हाथ नहीं रहेंगे, तब ये सब कहाँ? कवि इस संकट की ओर समाज को आगाह करते हैं।

केदारनाथ सिंह जी की कविता में प्रकृति का बहुत ही गहरा चित्रण देखने को मिलता है। केदारनाथ सिंह जी का प्रकृति से जुड़ाव और पर्यावरण के प्रति चिंता उनकी कविता में साफ देखने को मिलती है। जिस तरह से हमने जंगल साफ कर दिए हैं और जानवरों के घरों को अपना घर बनाकर बैठ गए हैं, ऐसे में जंगल का जानवर कहाँ जाएगा? ऐसे में वो भटकता हुआ शहर की ओर चला आता है।

प्रकृति के प्रेमी केदारनाथ सिंह जी प्रकृति में आने वाले संकट को लेकर काफी चिंतित हैं। प्राकृतिक तत्वों के अधिकाधिक शोषण से जो प्रकृति को क्षति पहुँची है, उसका मनुष्य के जीवन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा है। आज मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं पूँजीवाद के प्रसार में प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है। केदारनाथ सिंह जी अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के बीच प्रकृति संबंधी प्रश्न बार-बार उठाते हैं। केदारनाथ सिंह जी ने अपनी कविता संग्रह 'यहाँ से देखो', 'बाघ', 'अकाल में सारस' आदि में प्रकृति में होने वाले भयानक संकट से साक्षात्कार करवाया है।

'पानी की प्रार्थना' शीर्षक कविता में केदारनाथ सिंह जी ने दिखाया है कि कैसे पानी पूरी सिद्धत के साथ प्रभु के सामने एक दिन का हिसाब लेकर खड़ा होता है और उस एक दिन के हिसाब में पूरे पूँजीवादी सत्ता तंत्र की पोल खोलकर रख देता है। इसे हम इस पंक्ति के माध्यम से देख सकते हैं –

“पर यहाँ पृथ्वी पर मैं
यानी आपका मुँह लगा पानी
अब दुर्लभ होने के कगार तक
पहुँच चुका हूँ पर चिंता की कोई बात नहीं
यह बाजारों का समय है
और वहाँ किसी रहस्यमय स्रोत में मैं हमेशा मौजूद हूँ।”

केदारनाथ सिंह जी को प्रकृति से बहुत ही लगाव था, ऐसा उनके कविताओं में साफ देखने को मिलता है। जब भी कोई विचित्र या अनोखा बिंब उन्हें दिखाई देता तो वे उसे झट से कविताबद्ध कर देते थे। 'अकाल में सारस' नामक कविता संग्रह में संकलित यह हिंदी कविता 'एक मुकुट की तरह' भी है। इनकी कविताओं में नदी, नाले, फूल, जंगल, सरसों के खेत, धानों के बच्चे, बसंत, कोयल की कूक, चिड़िया, घास, फुनगी, पूरवा-पछवा हवा आदि सभी देखने को मिलती है। 'सृष्टि पर पहरा' शीर्षक कविता में इन्होंने इनका वर्णन इस प्रकार किया है –

“आदमी के जनतंत्र में
घास के सवाल पर

होनी चाहिए लंबी एक अखण्ड बहस
पर जब तक वह न हो
शुरुआत के तौर पर मैं घोषित करता हूँ
कि अगले चुनाव में
मैं घास के पक्ष में मतदान करुगा
कोई चुने या न चुने
एक छोटी सी पत्ती का बैनर उठाए
हुए वह तो हमेशा मैदान में है
कभी भी
कहीं भी उग आने की
एक जिद है वह।”

निष्कर्ष –

केदारनाथ सिंह जी ने अपनी कविताओं में प्रकृति के बारे में लिखा है पर प्रकृति उनके यहाँ वनस्पति नामों की आरोपित ध्वनि नहीं है। प्रकृति लिखते-लिखते कब वे मनुष्य लिखने लगते हैं, पता ही नहीं चलता। वे लिखना पहाड़ पर शुरु करते हैं और लिखा जाने लगता है श्रमिक। इसी तरह उन्होंने किसान और बैल आदि पर भी लिख है। बैल लिखते-लिखते कब वे किसान, जमीन, वर्षा, प्रदूषण आदि समस्याओं को उजागर करने लगते हैं, पता ही नहीं चलता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कवि केदारनाथ सिंह जी अपनी सर्जना की सार्थकता और भिन्न-भिन्न प्रेरणाओं की तलाश प्रकृति के बीच से ही करते हैं। प्रकृति चित्रण करते समय उनकी दृष्टि सूक्ष्म संवेदनाओं पर भी केन्द्रित होती है।

संदर्भ सूची –

1. विश्वम्भर मानव, डॉ. रामकिशोर शर्मा, आधुनिक कवि, पृष्ठ – 314
2. अज्ञेय सम्पादन तीसरा सप्तक, पृष्ठ – 124
3. विश्वम्भर मानव, डॉ. रामकिशोर शर्मा, पृष्ठ – 318
4. बाघ, सिंह केदारनाथ

ई स्वास्थ्य सेवाओं से मध्यप्रदेश के विपणन पर सकारात्मक प्रभाव

शिवालिका सोहगौरा, डॉ. एम. यू. सिद्धीकी

प्राध्यापक वाणिज्य महाविद्यालय, बैढन जिला सिंगरौली (म.प्र.)

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 24-26

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 20 July 2022

Published : 04 August 2022

सारांश :-

मध्यप्रदेश में आधुनिकता के आज के दौर में व्यापार एक महती भूमिका प्रदेश के विकास में अति आवश्यक बन गया है आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोरोना जैसी महामारी होने के कारण पूरा प्रदेश में आत्मनिर्भर भारत के अतर्गत प्रदेश के व्यक्तियों में एक स्वरोजगार की धारणा विकसित हो रही है जिसके अन्तर्गत यह विचारधारा सामने आ रही है कि व्यक्ति अन्य प्रदेशों में रोजगार न प्राप्त करके बल्कि प्रदेश में एवं स्वयं के घर पर रहकर व्यापार स्थापित करके प्रदेश के विकास में अपनी भूमिका निभाकर वृद्धि दर को बढ़ाना एवं उन्नति के नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आज जैसे ई-कामर्स और ई-कारोबार गतिविधियों के साथ-साथ ई-स्वास्थ्य सेवाओं का नवीन तकनीक विकसित करके एक स्वास्थ्य के क्षेत्र में विपणन करने का बड़ा अवसर युवाओं को प्राप्त होगा। भारत में ई-फार्मसी अभी शुरूआती दौर में है, लेकिन एक वर्तमान रिपोर्ट के मुताबिक 2025 तक यह बढ़कर 42 अरब डॉलर तक पहुँच जाये का अनुमान है। भारत में स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी तकनीक का बाजार 2025 तक 21.3 अरब डॉलर तक पहुँच जाएगा और स्वास्थ्य सेवा से जुड़े तकनीक के वैश्विक बाजार में इसकी हिस्सेदारी 3.2 प्रतिशत होगी भारत में फिलहाल स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी 133 स्टार्टअप कंपनियाँ मौजूद हैं और लॉकडाउन के दौरान इनकी माँग में अच्छी खासी बढ़ोत्तरी देखने को मिली।

परिचय :-

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (मध्यप्रदेश) के प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री प्रभुराम चौधरी द्वारा देश के स्वास्थ्य सेवाओं का प्रयोग करके बेहतर देश में प्रदेश का स्थान अग्रणी राज्यों में स्थापित करने का संकल्प लेकर ई-स्वास्थ्य सेवाओं का प्रयोग करके युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर बनाने की जिम्मेदारी ली है। विशेषज्ञों के मुताबिक ई-स्वास्थ्यको दवा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कारोबार और आधुनिक तकनीक से जुड़ा हुआ क्षेत्र माना जा सकता है। ई-स्वास्थ्य से आशय इलेक्ट्रॉनिक सूचना और संचार की नई तकनीकों का इस्तेमाल कर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। वैश्विक स्तर पर डिजिटल स्वास्थ्य या ई-स्वास्थ्य के बाजार में जबर्दस्त बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। यह बढ़ोत्तरी माँग और आपूर्ति, दोनों स्तरों पर रही। साल 2019-2025 के दौरान, स्वास्थ्य क्षेत्र के डिजिटल बाजार में 29.6 प्रतिशत CAGR (चक्रवृद्धि ब्याज दर) की दर से बढ़ोत्तरी की उम्मीद है। साल 2018 में स्वास्थ्य क्षेत्र का डिजिटल बाजार 86.4 अरब डॉलर था जिसके 2025 तक 500 अरब डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। शोध और बाजार के अनुमानों के मुताबिक 2023 तक वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य क्षेत्र का डिजिटल बाजार 223.7 अरब डॉलर तक पहुँच जाएगा। ई-स्वास्थ्य सेवाओं के ढाँचे के तहत स्वास्थ्यकर्मी और मरीज सीधे तौर पर एक दूसरे से सम्पर्क में नहीं होते हैं। इस प्रणाली में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के जरिए स्वास्थ्य और मरीज का संवाद होता है इसमें अलग-अलग तरह की सुविधाएँ होती हैं। जैसे-

टेलीमेडिसिन, एम हेल्थ (मोबाइल हेल्थ), इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकार्ड (EHR), बीमरेबल (पहनने लायक) सेंसर, इनका व्यापार तेजी से बढ़ा जिसके कारण विपणन में ई-स्वास्थ्य सेवा का मुख्य भूमिका रही है।

शोध का उद्देश्य :-

- (1) मध्यप्रदेश के विपणन में ई-स्वास्थ्य सेवाओं को परिचित कराना।
- (2) विपणन से जुड़े प्रमुख चिंतकों और लेखकों के विचार से अवगत कराना।
- (3) ई-स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना।
- (4) म.प्र. के विकास दर में ई-स्वास्थ्य सेवाओं की भागीदारी को बताना।
- (5) ई-स्वास्थ्य से प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव को बताना।

शोध प्रविधि :-

ई-स्वास्थ्य सेवाओं से विपणन के बारे में मध्यप्रदेश के व्यापार में भागीदारी सुनिश्चित करके प्रदेश के विकास में योगदान करना। शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ों का प्रयोग किया है तथा प्राथमिक तथ्य मुख्यतः आँकड़ों के संग्रहित करने एवं द्वितीय तथ्य प्रकाशन, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं एवं छपेलेख को आधार मानकर शोध पत्र तैयार किया गया।

अवलोकन :-

ई-स्वास्थ्य के अन्तर्गत टेलीमेडिसिन को टेली हेल्थ के तौर पर भी जाना जाता है। इसके तहत मोबाइल एवं लैपटॉप टैब का प्रयोग करके मरीज केन्द्र से ही स्वास्थ्य सेवाएँ (जाँच और सलाह) मुहैया करायी जाती है। इसी प्रकार मोबाइल हेल्थ (सम हेल्थ) के तहत स्मार्टफोन का इस्तेमाल कर लोगों को इलाज संबंधी सलाह दी जाती है। EHR के तहत मरीजों से जुड़ी जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक तरीके से सुरक्षित रखा जाता है। और इसे अलग-अलग फार्मेट के माध्यम से एक्सेस किया जाता है। वीयरबल सेंसर आपने स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इससे किसी व्यक्ति की हार्ट बीट, नींद की गुणवत्ता, ऑक्सीजन स्तर आदि पर नजर रखी जा सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार ई-स्वास्थ्य से जुड़े तीन मुख्य क्षेत्र हैं- (1) स्वास्थ्यकर्मियों और मरीजों दोनों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएँ और रिकार्ड उपलब्ध कराना (2) सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी आधारभूत संरचना को बेहतर बनाने के लिए सूचना तकनीक की ताकत और ई-कामर्स प्लेट फार्म का उपयोग करना। (3) स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रणालियों में ई-कामर्स और ई-कारोबार गतिविधियों का उपयोग करना। विश्वभर में कोरोना महामारी का प्रकोप फैलने के बाद ई-स्वास्थ्य सेवाएँ काफी उपयोगी साबित हो रही हैं। इस महामारी की वजह से जहाँ पूरी दुनिया में लॉकडाउन चल रहा था वहीं उसी दौरान स्वास्थ्य सेवाओं की भी जरूरत भी बढ़ रही थी। ऐसी स्थिति में इंटरनेट और दूरसंचार सेवाओं के इस्तेमाल के जरिए स्वास्थ्य सेवा की माँग में बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। कई देशों ने तात्कालिक आवश्यकता को देखते हुए निजी कंपनियों को ऐसे टूल बनाने में सहायता की, जिसके माध्यम से मरीजों की पहचान करने उसकी बीमारी की पहचान करने, उसके बीमारी के स्रोत का पता लगाने आदि में सहायता मिली। इन तकनीकों में चहे रा पहचानने वाला कैमरा, ड्रोन और सेंसर शामिल हैं, जिनसे किसी व्यक्ति के शरीर के ताप मा. और उनके स्वास्थ्य को स्थिति को पता लगाना संभव होता है। बाजार में शोध से पुरी संस्था 'ग्लोबल मार्केट इनसाइट्स' के मुताबिक साल 2024 तक स्वास्थ्य क्षेत्र का डिजिटल बाजार 379 अरब डॉलर पर पहुँच जायेगा, जबकि ट्रॉसपेरेन्सी मार्केट रिसर्च के अनुसार माल 2025 तक स्वास्थ्य क्षेत्र का डिजिटल बाजार 536.6 अरब डॉलर तक पहुँच जाएगा।

निष्कर्ष:-

मध्यप्रदेश में ई-स्वास्थ्य सेवाओं के कारण वर्तमान में मेडिकल व्यापार में कमी विपणन की नीतियों के काफी परिवर्तन देखने को मिला है जैसा कि देखा गया कि डॉक्टरों और मरीजों का सीधा सम्पर्क होने से बहुत अधिक तकनीक विस्तार किया गया यह देखा गया कि डिजिटल सेवाओं या ई-स्वास्थ्य के कई फायदे सामने आये जैसे बेहतर सेवा-स्वास्थ्य क्षेत्र में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर

पेशेवर स्वरूप कर्मी बेहतर तरीके से कम कर सकते हैं। इलाज की लागत में कमी, सशक्तीकरण ई-स्वास्थ्य सेवाओं के कारण ग्राहकों और स्वास्थ्य कर्मीदोनों का सशक्तीकरण किया जा सका है। बेहतर संबंध और समानता, शिक्षा तथा जलद फैसलाकरना मुमकिन हुआ दुनिया भर में कोरोना महामारी के बाद डिजिटल सेवाओं के प्रमुख सुझाव हुए जिसे म.प्र. के विपणन में ई-स्वास्थ्य की हिस्सेदारी पर्याप्त बढ़ी जैसे- स्मार्टफोन विगडाटा, वर्चुअल रिएलिटी, वीमरबेल (पहनने लायक) AIE, ब्लॉकचेन इत्यादि सेवाओं का व्यापार बढ़ा है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय को पहल के तहत एक ऐसा कार्यक्रम शुरू किया गया जिसमें सूचना काल के जरिए मातृत्व एवं प्रसव का देखभाल भी होने लगा। एक पुराने "स्वास्थ्य ही धन है" और इस क्षेत्र में तकनीकी निवेश के एक बेहतरीन कदम बढ़ाकर बाजार का विस्तार हुआ है।

संर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. योजना पत्रिका, फरवरी, 2022
2. कुरुक्षेत्र पत्रिका फरवरी 2022
3. एस. एन. ला, भारतीय अर्थव्यवस्था

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का शैक्षिक गुणवत्ता में योगदान

डॉ० धर्मेन्द्र कुमार वैश्य
असि० प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग,
आर०आर०पी०जी० कालेज, अमेठी, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Volume 5, Issue 4
Page Number : 27-36

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 20 July 2022
Published : 30 July 2022

सारांश- राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति (New National Education Policy-2020) यह इस संदर्भ में है कि शिक्षा क्षेत्र को 21 वीं सदी की मांगों और लोगों और देश की जरूरतों के प्रति खुद को तैयार करने की जरूरत है। क्वालिटी, इनोवेशन और रिसर्च स्तम्भ हों तो, जिन पर भारत एक ज्ञान सुपर पावर बनेगा। इसलिए हमारे देश इस नई शिक्षा नीति की जरूरत है। "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आशय ऐसी शिक्षा से है जो प्रत्येक बच्चे के काम आये। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास में समान रूप से उपयोगी हो।" अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नये ज्ञान को प्रकाशन में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान-कोष में वृद्धि करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NPE-2020) का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण सस्ती व समावेशी शिक्षा प्रदान करते हुए स्कूल शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करना है तथा इस बीच समाज के सामाजिक व शैक्षणिक पक्ष से वंचित रहे समूहों के बच्चों पर विशेष बल दिया गया है। यह एक श्रेष्ठभारत के निर्माण की ओर एक भविष्य मुखी उद्यम है विगत शिक्षा नीतियों का अधिकतर ध्यान स्कूल शिक्षा देने में पहुँच व समानता के मुद्दों पर केन्द्रित किया जाता रहा था, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 "एक जीवंत भारत की नींव रखने का संकल्प लेती है, जहां कोई भी स्कूल शिक्षा से वंचित न रहे, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को सच्चे अर्थों में राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाने में सहायता मिल सके। 'राष्ट्रीय शिक्षानीति-1986, जिसमें 1992 में संशोधन किया गया था के अपूर्ण एजेन्डे को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न किया गया है तथा इसके द्वारा निःशुक्ल व अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम-2009 के पीछे की अंतर्दृष्टि के द्वारा 'व्यापक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु कानूनी मदद मिली।'

मुख्य शब्द- नई राष्ट्रीय, शिक्षा, नीति, "गुणवत्तापूर्ण, शिक्षा, अधिकार, निर्माण, अधिनियम।

प्रस्तावना : नई शिक्षा नीति का निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (Indian Space Reserch Organasation) (ISRO) प्रमुख डॉ० के० कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था, इस समिति ने मई 2019 में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा' प्रस्तुत किया था, जो हाल ही में केन्द्र सरकार ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy-2020)' को मंजूरी दी है। नई शिक्षा नीति 34 वर्ष पुरानी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (National Policy of Education (NPE) 1986)' को प्रतिस्थापित करेगी।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की अविवादित भूमिका के कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 विद्यालय की आधारभूत संरचना व अध्यापकों की गुणवत्ता व मान्यता पर पूरी तरह सही ढंग से बल देती है। क्योंकि जवाब देह पारदर्शी व उसका किफायती होना समय की आवश्यकता है तथा इसीलिए स्कूलों व अध्यापकों को विश्वास के साथ अधिकार देने, उन्हें उत्कृष्ट बनाने हेतु प्रयास करने व अपना बहुत अच्छा कार्य निष्पादन प्रस्तुत करने योग्य बनाने के साथ-साथ इसे पूरी तरह पारदर्शिता से क्रियान्वित करके प्रणाली की अखण्डता को सुनिश्चित करने व सभी वित्तीय स्थितियों, कार्य, विधियों व परिणामों को जनता के समक्ष पूरी तरह उजागर करना आवश्यक है। स्कूल परिसरों व समूहों के द्वारा कार्यकुशल ढंग से स्रोत इकट्ठे करने व प्रभावी शासन की आवश्यकता है जो कि एक महत्वपूर्ण पहल है क्योंकि इस तथ्य से सभी भलीभांति वाकिफ है कि भारत के 289 प्रतिशत सरकारी प्राइमरी स्कूलों व 14.8 प्रतिशत अपर प्राइमरी स्कूलों में 30 से कम विद्यार्थी हैं। वर्ष 2016-17 में प्राइमरी स्कूलिंग प्रणाली में ग्रेड विद्यार्थियों की औसत संख्या ग्रेड 1 से 8 तक लगभग 14 थी तथा 6 से कम विद्यार्थियों का वर्णनीय अनुपात था, उसी वर्ष 108017 स्कूल केवल एक ही अध्यापक के सहारे चल रहे थे तथा उनमें से अधिकतर 85,743 प्राइमरी स्कूल थे, जो ग्रेड्स 1-5 तक के ही बच्चों को पढ़ा रहे थे, इस प्रकार समूह अर्थात् स्कूल परिसरों में ताना-बाना स्थापित करने हेतु एक प्रबंध विकसित करने की अत्यधिक आवश्यकता है, जहाँ एक सैकण्डरी स्कूल व अन्य सभी स्कूल होते हैं इस प्रकार समूह (क्लस्टर) में अधिक स्रोत कार्य कुशलता व कार्य, तालमेल, नेतृत्व, शासन व स्कूलों का प्रबंध अधिक प्रभावशाली है इससे न केवल स्रोतों की अधिक से अधिक उपयोगिता सुनिश्चित होगी, अपितु राष्ट्र के भविष्य स्कूल के बच्चों में एकता व एकजुटता की भावना विकसित होगी।

नई शिक्षा नीति-2020 की भाषा अत्यंत सरल, सारगर्भित तथा स्पष्ट है, एक सामान्य व्यक्ति को इसे समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यह नीति बहुत ही अद्भुत है तथा वास्तव में एक सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति करती है, भारत का विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित होना अब केवल भावनात्मक विषय नहीं है, यह एक मुख्य नीति निर्धारक तत्व के रूप में शिक्षा नीति के माध्यम से प्रकट हुआ है। 'सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टि, नागरिक मूल्य, जीवन कौशल तथा सेवा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्धारक तत्व के रूप में स्थापित हुए हैं।'

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा है जो प्रत्येक बच्चे के काम आये। इसके साथ ही प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं के संपूर्ण विकास में समान रूप से उपयोगी हो।" यह शिक्षा प्रत्येक बच्चों के लिए उपयोगी है इसके माध्यम से छात्र जीवन कौशलों का विकास कर सकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बहु आयामी संप्रत्यय है।

"एक अच्छे गुणवत्तापूर्ण स्कूल को आवश्यक रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करानी होती है लेकिन इससे कुछ अधिक की भी जरूरत हो सकती है उदाहरण के लिए सब बच्चों के साथ समान व्यवहार और सबके प्रति निष्पक्षता चाहे वह किसी भी सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि से हो।"

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में गुणवत्तापरक शिक्षा की सुनिश्चितता : स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, स्कूली शिक्षा को रोजगारोन्मुखी और गुणवत्ता परक बनाने के लिए कई कदम उठा रहा है। विभाग विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों और वैश्विक बाजार के लिए युवाओं को शिक्षित, रोजगार लायक और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए उद्देश्य से केन्द्र प्रायोजित राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आर0एम0एस0ए0) योजना के अन्तर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायिक घटक को कार्यान्वित कर रहा है, इसमें शिक्षित और रोजगार लायक युवाओं के बीच के अन्तर को कम करने, माध्यमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वालों की दर कम करने और उच्चतर स्तर पर शिक्षा के दबाव को कम करने पर भी ध्यान दिया गया है। इस योजना में 9वीं से 12वीं कक्षा तक के सामान्य शैक्षिक विषयों के साथ ही खुदरा व्यापार, आटोमोबाइल, कृषि, दूरसंचार, ब्यूटी एण्ड बेलनेस, आईटी, इलेक्ट्रानिक्स, सुरक्षा, मीडिया और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों के रोजगारोन्मुख, व्यावसायिक विषय शुरू किये गए हैं।

माध्यमिक स्तर पर छात्रों को गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने के लिए आर0एम0 एस0ए0 के अंतर्गत विभिन्न पहलुओं को वित्तीय सहायता दी गयी है। जिनमें छात्र-शिक्षक अनुपात में सुधार के लिए अतिरिक्त शिक्षक, शिक्षकों, प्रधानाचार्यों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण सहित इंडक्शन और इन- सर्विस-ट्रेनिंग, गणित और विज्ञान किट, स्कूल में आईसीटी सुविधाएं, प्रयोगशाला उपकरण एवं सीखने को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रशिक्षण शामिल है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) समय-समय पर तीसरी, पांचवी, आठवीं, और दसवीं कक्षा के छात्रों में सीखने की उपलब्धियों का राष्ट्रीय सर्वेक्षण करता है। अब तक पांचवी कक्षा के लिए राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएसए) के चार और तीसरी तथा आठवीं के तीन राउंड हो चुके हैं। इससे यह पता चला कि पहले से चौथे राउंड के दौरान चिन्हित विषयों में छात्रों के सीखने की उपलब्धि के स्तर में काफी सुधार हुआ है। सरकार ने यह निर्णय लिया है कि वर्तमान वर्ष से सभी सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक के सभी छात्रों का वार्षिक राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण किया जाएगा। प्रारम्भिक सत्र में सभी कक्षाओं के सभी विषयों के लिए (NCERT) 'National Council of Educational Research and Training' द्वारा विकसित सीखने के परिणाम के अनुसार छात्रों में सीखने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाएगा।

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की एक पहल : स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, स्कूली शिक्षा को रोजगारोन्मुख और गुणवत्ता पर बनाने के लिए कई कदम उठा रहा है। विभाग विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों और वैश्विक बाजार के लिए युवाओं को शिक्षित करने, रोजगार लायक और प्रतिस्पर्धी बनाने के उद्देश्य के केन्द्र प्रायोजित "राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान" योजना के अंतर्गत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायिक घटक को कार्यान्वित कर रहा है।

गुणवत्ता शिक्षा के उद्देश्य :

- बच्चों को उनकी मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) और उनके प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण का ज्ञान कराना।
- बच्चों को स्वास्थ्य सम्बंधी नियमों का ज्ञान कराना और स्वास्थ्य बर्द्धक क्रियाओं में प्रशिक्षित करना।

- बच्चों को सांस्कृतिक क्रियाओं उत्सव, लोकगीत, लोकनृत्य आदि में भाग लेने की ओर अग्रसर करना और सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास करना।
- नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना।
- बच्चों को पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सचेत करना, उनमें वैज्ञानिक प्रवृत्ति की योग्यता को विकसित करना।
- लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास।
- व्यावसायिक कुशलता का विकास।
- नेतृत्व शक्ति का विकास।
- छात्रों में राष्ट्रीय अनुशासन की भावना का विकास करना।
- युवकों में प्रजातांत्रिक मूल्यों—समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व और न्याय का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना।
- स्कूली शिक्षा के लिए समग्र शिक्षा योजना का विकास करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा मिशन की स्थापना।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रत्येक स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता का योगदान : यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और यह 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन0पी0ई0) 1986 की जगह लेगी। सबके लिए आसान पहुँच, इक्विटी, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के आधार भूत स्तम्भों पर निर्मित यह नई शिक्षा नीति सतत् विकास के लिए एजेंडा 2030 के अनुकूल है और इसका उद्देश्य 21वीं सदी के जरूरतों के अनुकूल स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र लचीला बनाते हुए भारत की एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना और प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है।

नये पाठ्यक्रम और शैक्षिक संरचना के साथ प्रारम्भिक बचपन की देखभाल और शिक्षा :

बचपन की देखभाल और शिक्षा पर जोर देते स्कूल पाठ्यक्रम के 10+2 ढांचे की जगह 5+3+3+4 का नया पाठ्यक्रम संरचना लागू किया जायेगा जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 वर्ष के बच्चों के लिए है। इसमें अब तक दूर रखे गए 3-6 साल के बच्चों को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने का प्रावधान है, जिसे विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण चरण के रूप में मान्यता दी गई है। नई प्रणाली में तीन साल की आंगनवाड़ी/प्रा स्कूलिंग के साथ 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा होगी।

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करना : बुनियादी साक्षरता संख्यात्मक ज्ञान की प्राप्ति को सही ढंग से सीखने के लिए अत्यन्त जरूरी एवं पहली आवश्यकता मानते हुए 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' में तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम0एच0 आर0 डी0) 'Ministry Of Human Resource Development' द्वारा 'बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान एक राष्ट्रीय मिशन' की स्थापना किए जाने पर विशेष जोर दिया गया है। राज्य वर्ष 2025 तक सभी प्राथमिक स्कूलों में ग्रेड 3 तक सभी

शिक्षार्थियों द्वारा सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त कर लेने के लिए एक कार्यान्वयन योजना तैयार करेंगे तथा एक राष्ट्रीय पुस्तक संवर्धन नीति तैयार की जायेगी।

8वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बचपन देखभाल और शिक्षा : बचपन की देखभाल और शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढाँचा (NCPFECCE) 'National Curricular And Pedagogical Framework for Eearly Childhood Care And Education' के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा विकसित करेगा। एक विस्तृत और मजबूत संस्थान प्रणाली के माध्यम से प्रारम्भिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE) 'Eearly Childhood Care And Education' मुहैया कराई जाएगी। इसमें आंगनवाड़ी और प्री-स्कूल भी शामिल होंगे जिसमें शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम में प्रशिक्षित शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता होंगे।

स्कूल के पाठ्यक्रम और अध्यापन कला में सुधार : स्कूल के पाठ्यक्रम और अध्यापन-कला लक्ष्य यह होगा कि 21वीं सदी के प्रमुख कौशल या व्यावहारिक जानकारीयों से विद्यार्थियों को प्राप्त कराकर उनका समग्र विकास किये जाए और आवश्यक ज्ञान प्राप्ति एवं अपरिहार्य चिन्तन को बढ़ाने व अनुभवात्मक शिक्षण पर अधिक फोकस करने के लिए पाठ्यक्रम को कम किया जाए तथा छात्रों को पसंदीदा विषय चुनने के लिए कई विकल्प दिये जाएंगे। कला एवं विज्ञान के बीच पाठ्यक्रम व पाठ्येत्तर गतिविधियों के बीच और व्यावसायिक एवं शैक्षणिक विषयों के बीच सख्त रूप में कोई भिन्नता नहीं होगी।

स्कूलों में छठे ग्रेड से ही व्यावसायिक शिक्षा शुरू हो जाएगी और इसमें इंटरनशिप शामिल होगी। एक नई एवं व्यापक स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 'NCFSE-2020-21' (National Curriculum Frame Work for School Education), NCERT (National Council of Educational Research And Training) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित की जाएगी।

बहुभाषावाद और भाषा की ताकत : इस नीति में कम से कम ग्रेड 5 तक अच्छा हो कि ग्रेड 8 तक और उससे आगे भी मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा को ही शिक्षा का माध्यम रखने पर जोर दिया गया है। विद्यार्थियों को स्कूल के सभी स्तरों और उच्च शिक्षा में संस्कृत को एक विकल्प के रूप में चुनने का अवसर दिया जायेगा। त्रि-भाषा फार्मूले में भी यह विकल्प शामिल होगा।

मूल्यांकन/आकलन में सुधार : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में योगात्मक आकलन के बजाय नियमित एवं रचनात्मक आकलन को अपनाने की परिकल्पना की गई है, जो अपेक्षाकृत अधिक योग्यता-आधारित हैं, सीखने के साथ-साथ अपना विकास करने को बढ़ावा देता है, और उच्च स्तरीय कौशल जैसे कि विश्लेषण क्षमता, आवश्यक चिंतन मनन करने की क्षमता और वैचारिक स्पष्टता का आकलन करता है। सभी विद्यार्थी ग्रेड 3, 5 और 8 में स्कूली परीक्षाएं देगे, जो उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा संचालित की जाएगी। ग्रेड 10 एवं 12 के लिए बोर्ड परीक्षाएं जारी रखी जाएंगी, लेकिन समग्र विकास करने के लिए लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इन्हें नया स्वरूप दिया जाएगा। एक नया राष्ट्रीय आकलन केन्द्र परख (समग्र विकास के लिए कार्य-प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और ज्ञान विश्लेषण) एक मानक निर्धारक निकाय के रूप में स्थापित किया जाएगा।

समान और सामवेशी शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा अपने जन्म या पृष्ठ भूमि से जुड़ी परिस्थितियों के कारण ज्ञान प्राप्ति या सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के किसी भी अवसर से वंचित नहीं रह जाए। इसके तहत विशेष जोर सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित समूहों SEDG (Socio Ecomomically Disadvantaged Group) पर रहेगा जिनमें बालक-बालिका,

सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक संबंधी विशिष्ट पहचान एवं दिव्यांगता शामिल हैं। इसमें बुनियादी सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों एवं समूहों के लिए बालक-बालिका समावेशी कोष और विशेष शिक्षा जोन की स्थापना करना भी शामिल है। दिव्यांग बच्चों को बुनियादी चरण से लेकर उच्च शिक्षा तक की नियमित स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाया जाएगा जिसमें शिक्षाविशारद का पूरा सहयोग मिलेगा और इसके साथ ही दिव्यांगता सम्बन्धी समस्त प्रशिक्षण, संसाधन केंद्र, आवास सहायक उपकरण, प्रौद्योगिकी-आधारित उपयुक्त उपकरण और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अन्य सहायक व्यवस्थाएं भी उपलब्ध कराई जाएगी। प्रत्येक राज्य/जिले को कला-संबंधी, कैरियर- सम्बन्धी और खेलकूद-सम्बन्धी गतिविधियों में विद्यार्थियों के भाग लेने के लिए दिन के समय वाले एक विशेष बोर्डिंग स्कूल के रूप में 'बाल भवन' स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। स्कूल की निःशुल्क बुनियादी ढांचागत सुविधाओं का उपयोग सामाजिक चेतना केन्द्रों के रूप में किया जा सकता है।

स्कूल प्रशासन : स्कूलों को परिसरों या क्लस्टरों में व्यवस्थित किया जा सकता है जो प्रशासन (गवर्नेंस) की मूल इकाई होगा और बुनियादी ढांचागत सुविधाओं, शैक्षणिक पुस्तकालयों और एक प्रभावकारी प्रोफेशनल शिक्षक-समुदाय सहित सभी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करेगा।

उच्चतर शिक्षा : 2035 तक सकल नामांकन अनुपात GER (Gross Enrolment Ratio) को बढ़ाकर 50 प्रतिशत करना एनईपी 2020 का लक्ष्य व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्चतर शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 26.3 प्रतिशत (2018) से बढ़ाकर 2035 तक 50 प्रतिशत करना है। उच्चतर शिक्षा संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटें जोड़ी जाएंगी।

समग्र बहुविषयक शिक्षा : नीति में लचीले पाठ्यक्रम, विषयों के रचनात्मक संयोजन, व्यावसायिक शिक्षा एवं उपयुक्त प्रमाणन के साथ मल्टीपल एंट्री एवं एक्जिट बिन्दुओं के साथ व्यापक, बहुविषयक, समग्र अवर स्नातक शिक्षा की परिकल्पना की गई है। यूजी शिक्षा इस अवधि के भीतर विविध एक्जिट विकल्पों तथा उपयुक्त प्रमाणन के साथ 3 या 4 वर्ष की हो सकती है। उदाहरण के लिए 1 वर्ष के बाद सर्टिफिकेट, 2 वर्षों के बाद एडवांस डिप्लोमा, 3 वर्षों के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक।

विनियमन : चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर समस्त उच्च शिक्षा के लिए एक एकल अति महत्वपूर्ण व्यापक निकाय के रूप में भारत उच्च शिक्षा आयोग HECI (Higher Education Commission of India) का गठन किया जाएगा।

अध्यापक शिक्षण : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NCERT (National Council of Educational Research And Training) के परामर्श से, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् NCTE (National Council for Teacher Education) के द्वारा अध्यापक शिक्षण के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा शिक्षक शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2021 NCFTE (National Curriculum frame Wrok for Teacher Education) तैयार किया जाएगा। वर्ष 2030 तक शिक्षण कार्य करने के लिए कम से कम योग्यता 4 वर्षीय इंटीग्रेटेड बी0एड0 डिग्री हो जाएगी। गुणवत्ताविहीन स्वचालित अध्यापक शिक्षण संस्थान टी0ई0ओ0 के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी।

छात्रों के लिए वित्तीय सहायता : एस0सी0, एस0टी0, ओ0बी0सी0 और अन्य विशिष्ट श्रेणियों से जुड़े हुए छात्रों की योग्यता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाएगा। छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की प्रगति को समर्थन प्रदान करना, उसे बढ़ावा देना और उनकी प्रगति को ट्रैक करने के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति

पोर्टल का विस्तार किया जाएगा। निजी उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने यहाँ छात्रों को बड़ी संख्या में मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्तियों की पेशकश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

खुली और दूरस्थ शिक्षा : सकल नामांकन अनुपात (जी0ई0आर0) को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए इसका विस्तार किया जाएगा। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और डिजिटल संग्रहों, अनुसंधान के लिए वित्तपोषित, बेहतर छात्र सेवाएं, बड़े पैमाने पर मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम MOOC (Massive Open Online Course) द्वारा क्रेडिट आधारित मान्यता आदि जैसे उपायों को यह सुनिश्चित करने के लिए अपनाया जाएगा कि यह उच्चतम गुणवत्ता वाले इन कार्यक्रमों के समतुल्य हों।

ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल : हाल ही में महामारी और वैश्विक महामारी में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सिफारिशों के एक व्यापक सेट को सम्मिलित किया गया है, जिससे जब कभी और जहां भी पारम्परिक और व्यक्तिगत शिक्षा प्राप्त करने का साधन उपलब्ध होना संभव नहीं है, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए, स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को ई-शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय MHRD (Ministry Of Human Resource Development) में डिजिटल अवसंरचना, डिजिटल कन्टेंट और क्षमता निर्माण के उद्देश्य से उद्देश्य से एक समर्पित इकाई बनाई जाएगी।

भारतीय भाषाओं को बढ़ावा : सभी भारतीय भाषाओं के लिए संरक्षण विकास और जीवंतता सुनिश्चित करने के लिए नई शिक्षा नीति द्वारा पाली फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए एक भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान IITI (Indian Institute Of Translation and Interpretation) (राष्ट्रीय संस्थान) या संस्थान (की स्थापना करने उच्च शिक्षण संस्थानों में संस्कृत और सभी भाषा विभागों को मजबूत करने और ज्यादा से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थानों के कार्यक्रमों में, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा का उपयोग करने की सिफारिश की गई है।)

व्यावसायिक शिक्षा : सभी व्यावसायिक शिक्षाओं को उच्च शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाएगा। स्वचलित तकनीकी विश्वविद्यालयों, स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालयों, कानूनी और कृषि विश्वविद्यालयों आदि को उद्देश्य बहु-विषयक संस्थान बनना होगा।

प्रौढ़ शिक्षा : इस नीति का लक्ष्य 2030 तक 100 प्रतिशत युवा और प्रौढ़ साक्षरता की प्राप्ति करना है।

वित्तपोषित शिक्षा : शिक्षा पहले की तरह लाभ के लिए नहीं व्यवहार पर आधारित होगी जिसके लिए पर्याप्त रूप से धन मुहैया कराया जाएगा। शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए, केन्द्र और राज्य मिलकर काम करेंगे जिससे सकल घरेलू उत्पाद GDP (Gross Domestic Product) में इसका योगदान जल्द से जल्द 6 प्रतिशत हो सके।

प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता की रूपरेखा-

फाउंडेशन स्टेज : पहले तीन साल बच्चे आंगनबाड़ी में प्री-स्कूलिंग शिक्षा लेंगे। फिर अगले दो वर्ष कक्षा एक एवं दो के बच्चों स्कूल में पढ़ेंगे। इन पाँच सालों की पढ़ाई के लिए एक नया पाठ्यक्रम तैयार होगा। इसमें मोटे तौर पर एक्टिविटी (Activity) आधारित शिक्षण पर ध्यान रहेगा। इसमें तीन से आठ साल तक की आयु के बच्चे सम्मिलित होंगे। इस प्रकार पढ़ाई के पहले पाँच साल का चरण पूरा होगा।

प्रीपैरेटरी स्टेज (Preparatory Stage) : इस चरण में कक्षा तीन से पांच तक की पढ़ाई होगी। इस दौरान प्रयोगों के जरिए बच्चों को विज्ञान, गणित, कला आदि की पढ़ाई कराई जाएगी। इसमें 8 से 11 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को शामिल किया जाएगा।

- विषय वस्तु का भार कम किया जाए।
- बच्चों की शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में हों।
- 5 वर्ष की आयु से पहले प्रत्येक बच्चा एक प्रारम्भिक कक्षा या बाल वाटिका (अर्थात् कक्षा 1 से पहले) जाएगा।
- आयु 6 से 8 वर्ष ग्रेड 1-2 मूलभूत चरण।
- आयु 8 से 11 ग्रेड 3-5 प्रारम्भिक चरण खेल, खोज और गतिविधि आधारित और इण्टरैक्टिव कक्षा सीखना।

माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता की रूपरेखा :

मिडिल स्टेज:— इसमें कक्षा 6-8 तक की पढ़ाई होगी तथा 11 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चों को सम्मिलित किया जाएगा। इन कक्षाओं में पूर्व निर्धारित एवं विषय आधारित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा। इसमें कक्षा 6 से ही कौशल विकास कोर्स भी शुरू हो जाएंगे।

सेकेण्डरी स्टेज:— इसमें कक्षा 9 से 12 तक पढ़ाई दो चरणों में होगी, जिसमें विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन कराया जाएगा। छात्रों को विषयों की चुनने की स्वतंत्रता भी होगी।

- आयु 11-14 ग्रेड 6-8 मध्यचरण, विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान, और मानविकी में अनुभवात्मक शिक्षा।
- आयु 14-18 ग्रेड 9-12 माध्यमिक चरण, बहुविषयक अध्ययन, अधिक महत्वपूर्ण सोंच, लचीलापन और विषयों के छात्र की पसंद में स्वतंत्रता।
- स्कूली पाठ्यक्रम को 10+2 की जगह पर 5+3+3+4 की नई पाठ्यक्रम संरचना लागू की जाएगी।
- नेशनल एसेसमेंट सेन्टर “परख” ‘प्रदर्शन आंकलन, समीक्षा और समग्र विकास के लिये ज्ञान का विश्लेषण’ (Performance Assessment, Review and Analysis Knowledge for Holistic Development) बनाया जाएगा, जो बच्चों के सीखने की क्षमता का समय-समय पर परीक्षण किया जायेगा।

उच्च स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता की रूपरेखा:

- उच्च शिक्षा में मल्टीपल इंटी और एग्जिट का विकल्प।
- उच्च शिक्षा के लिए एक ही रेग्युलेटर व्यवस्था।
- नेशनल रिसर्च फाउंडेशन NRF (National Research Foundation) की स्थापना होगी।
- शिक्षा में तकनीकी को बढ़ावा देना।
- दिव्यांगजनों के लिए शिक्षा में बदलाव।
- 2030 तक प्रत्येक जिले में कम से कम एक बड़ी बहुविषयक उच्च शिक्षा संस्थान का निर्माण किया जाएगा।
- यू0जी0सी0, ए0आई0सी0टी0ई0 को भारत एकल उच्च शिक्षा नियामक HECI (Higher Education Commission of India) द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।
- विश्वविद्यालयों का नाम स्वामित्व के आधार पर नहीं बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर रखा जायेगा।

- भारत का उच्च शिक्षा आयोग HECI के 4 कार्य क्षेत्र राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद या HNERC, राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (NAC), उच्च शिक्षा अनुदान परिषद (HEGC) और सामान्य शिक्षा परिषद (GEC) बनने के लिए जो आगे चलकर एक राष्ट्रीय शिक्षा योग्य फ्रेमवर्क बनाएंगे।
- इंडियन काउंसिल फार एग्रीकल्चरल रिसर्च (ICAR) वेटनरी काउंसिल ऑफ इंडिया (VCI) नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (NCTE), काउंसिल ऑफ आर्किटेक्चर (COA), नेशनल काउंसिल फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (NCVET) जैसी व्यावसायिक परिषदें आदि व्यावसायिक मानक सेटिंग निकायों (PSSBs) के रूप में कार्य करेगा।

सुझाव :

- एन०सी०ई०आर०टी० 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बचपन देखभाल और शिक्षा (NCPFECCE) के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा विकसित करेगा।
- सामाजिक और आर्थिक नजरिए से वंचित समूहों SEDG (Socio Economically) Disadvantaged Group) की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाये।
- शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय प्रोफेशनल मानक (NPST) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2022 तक विकसित कर लिया जाये। जिसके लिए NCERT, SCERT शिक्षकों और सभी स्तरों एवं क्षेत्रों के विशेषज्ञ संगठनों के साथ परामर्श किया जाए।
- जी०डी०पी० का छह फीसद शिक्षा में लगाने का लक्ष्य भी रखा गया है जो अभी 4.43 प्रतिशत है, इसे जल्द छह फीसदी में परिवर्तन किया जाए।
- नई शिक्षा लक्ष्य 2030 तक 3-18 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सम्पूर्ण रूप से प्रदान कराया जाए।
- छठी कक्षा के बाद से ही इंटरनशिप शिक्षा की व्यवसा करवाई जाए, इसके अलावा म्यूजिक और आर्ट्स शिक्षा को भी बढ़ावा दिया जाए तथा इसे पाठ्यक्रम में लागू किया जाए।
- उच्च शिक्षा में मल्टीपल इंट्री और एग्जिट का विकल्प देने की व्यवस्था।
- सरकारी और प्राइवेट शिक्षा मानक समान हों।
- शिक्षा में तकनीकी को अधिक बढ़ावा दिया जाए।
- छात्रों के लए विषय वस्तु का भार कम किया जाए।
- स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता प्रत्येक पाँच वर्षों में समीक्षा की जाए।
- शिक्षक शिक्षा के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम तैयार किया जाएगा, जिसे NCFTE 2021, NCERT द्वारा NCERT, के परामर्श से बनाया जाए। 2030 तक शिक्षण के लिए न्यूनतम डग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी०एड० डिग्री की व्यवस्था किया जाए।
- अर्ली चाइल्डहुड केयर एवं एजुकेशन के लिए पाठ्यक्रम सन०सी०ई० आर०टी० द्वारा तैयार कराया जाए।
- सामाजिक और आर्थिक नजरिए से वंचित समूहों (SEDG) की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाए।

- 2040 तक प्रत्येक जिले में कम से कम एक बड़ी बहु विषयक उच्च शिक्षा संस्थान बनाने का लक्ष्य पूरा कर लिया जाए।
- छात्रों के कौशल विकास पर विशेष जोर दिया जाए।
- सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में सीखने के एक ही मानक होंगे और शुक्ल भी एक समान होना चाहिए।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (National Council of Education Research and Training- NCERT) द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (National Curricular Framework for School Education –NCFSE, 2020-21) तैयार करना।
- छात्र कक्षा 3, 5 और के स्तर पर स्कूली परीक्षाओं में भाग लेंगे जिन्हें उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा संचालित किया जाएगा।

निष्कर्ष :-उपर्युक्त जन विषयों पर हमने चर्चा की है वे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ खास बिन्दु हैं। इसके अतिरिक्त दस्तावेज में विस्तृत रूप में कई विषयों को रखा गया है जिस पर चर्चा हो रही है, जैसे प्रस्तावित नई शिक्षा नीति में यह विवरण दिया गया है कि किस तरह नये शिक्षा ढांचे के अनुरूप शिक्षकों को तैयार किया जाए, किस तरह से संसाधन जुटाये जाए। शिक्षा के विभिन्न स्तर पर बच्चों के अभिभावकों की सहभागिता कैसे बढ़ाई जाए। इसके पहले 1986 में नयी शिक्षा नीति आयी थी, जिसमें बाद में 1992 में कुछ सुधार किए गए, तथा इतने वर्ष बाद अब इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रारूप सामने आया है यह नयी शिक्षा नीति बच्चों के भविष्य को बेहतरीकरण बनाने के उद्देश्य से लाया गया है।

सन्दर्भ :-

1. पाठक पी०डी० (2014–15): 'भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. आचार्य, पं०श्रीराम शर्मा : 'शिक्षा एवं विद्या', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा। (2012)
3. लाल, रमन बिहारी (2008) : 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं', रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ।
4. अग्रवाल, उमेशचन्द्र (2006) : भारतीय आधुनिक शिक्षा के बदलते आयाम, भारतीय आधुनिक शिक्षा N.C.E.R.T. नई दिल्ली।
5. सिंह भगवती शरण (1991) : 'आधुनिक भारत के निर्माता', आचार्य नरेन्द्र देव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
6. नायक जे०पी० (1972) : इकवलिटी क्वालिटी एंड क्वालिटी, द इलूसिव ट्रिंगल इन इंडियन एजुकेशन, नई दिल्ली।
7. अरविन्दो (1948): ए सिस्टम ऑफ नेशनल, आर्या पब्लिशिंग हाउस कलकत्ता।
8. sodhaganga.inflibnet.ac.in
9. [https:// educationmirror.org](https://educationmirror.org)



Globalisation and New Tourism - A Sociological Understanding

Khushboo

PhD research scholar, Department of Sociology, Babasaheb Bhimrao Ambedkar Central university, Lucknow,
U.P., India

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 40-47

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 20 July 2022

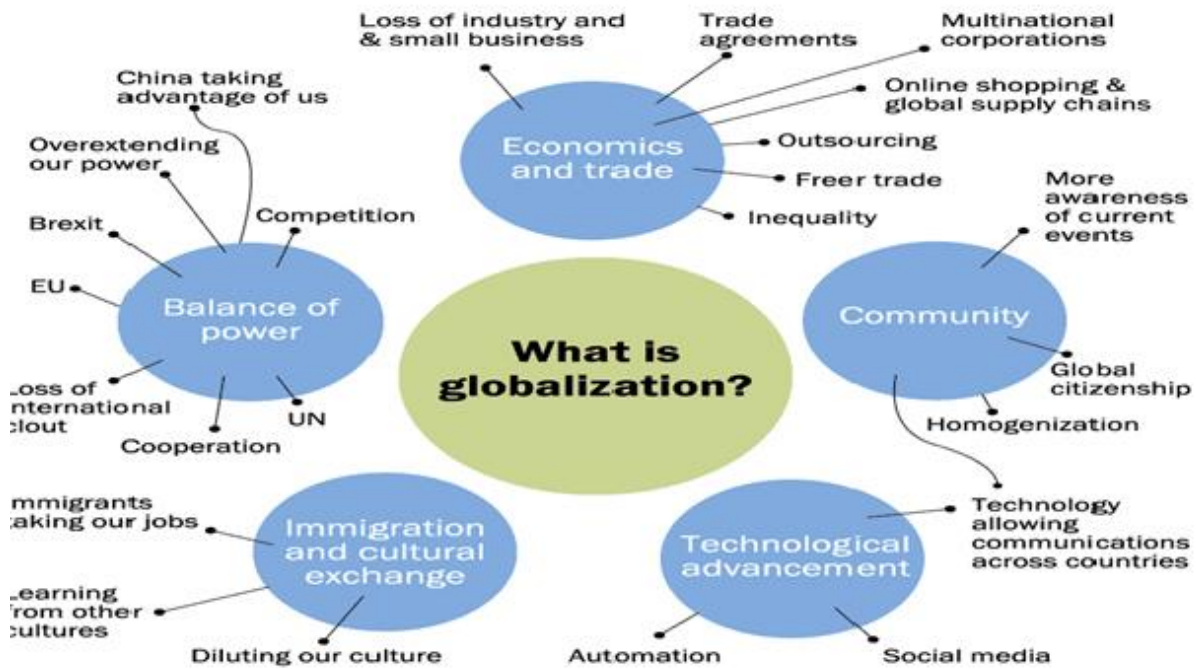
Published : 30 July 2022

Abstract- The term "globalisation," widely used today and ingrained in our culture, refers to the pervasive deepening of transnational linkages distinctive to our century. The study explicitly examined the distinct influence of tourism on the developing economy and tried to elucidate the conflicting effects that globalisation has on development. The major causes of the nation's uneven patterns of development. The globalisation trend has impacted all facets of social production and life. By connecting the entire community and enhancing its mobility, tourism has significantly aided in the process of globalisation, suggesting that it is an additional phenomenon. The article explored the fundamental connections between tourism, labour, leisure, and all aspects of daily social life, as well as the shift in sociological emphasis between modern and postmodern society. Current studies of globalisation that have burst into academic and public debate in the last few years have progressively focused their attention on an important side-effect of the phenomena they analyse. That side-effect is the massive surge in international tourism. Globalisation is the process by which communities are brought together as a single, interdependent whole using an ever-growing network of linkages that cross national political boundaries. This process results in a shrinking world in which local differences are quickly undermined and swallowed up within a massive global social order. When considered correctly, tourism may be viewed as both a contributor to and an effect of globalisation. It bolsters the trend toward a convergence that can be seen worldwide. People interact with one another and gain knowledge from one another. Still, goods and services also travel and are distributed worldwide to cater to the requirements and preferences of those on the move. At the same time, as is pointed out in this article, the expansion of tourism occurs more as a response to the demands and requirements brought about by globalisation.

Keywords: *Global Economy, Globalization, the demand for tourism, and the supply of tourism*

Introduction- Globalisation is a persistent phenomenon that impacts all countries, although there is intense debate among academics over how to define it. Many people conflate the phrases globalisation, internationalisation, liberalisation, universalisation, and westernisation. Insofar as international borders are not eliminated by globalisation but rather are transcended, these viewpoints fail to recognise that globalisation cannot be understood as the development of an open and borderless world or increased trade between nations. Considering this, the most appropriate definition of globalisation is based on the idea that it involves reconfiguring social geography to enable the intensification of transplanted relationships. Globalisation is a phenomenon that has had an impact on all facets of contemporary life, including the economic and cultural spheres.

However, at the same time, the expansion of the tourism industry is driven by the growing interconnectedness of countries and economies worldwide. Tourism is credited with playing a vital role in shaping globalisation. As globalisation progresses, destination countries become increasingly susceptible to regional and international events. By making logical connections between several pieces of prior research on economic globalisation and tourism, this study examines various related topics. Specifically, it looks at globalisation's effects on the hospitality industry. Because there is a dearth of quantitative evidence, some people have proposed future areas for research to investigate the interconnection of tourism demand and the influence of global events. The strain to meet global needs in a connected society may lead to investments in massive infrastructure in metropolitan areas at the expense of the growth of rural communities. Our analysis confirms that most tourism operations in Brazil are concentrated in coastal and urban areas rather than rural ones and that the regions that profit the most from this industry do not always need the most on it for survival. More significant revenues are observed in the coastal areas, state capital cities, and just a few municipalities, indicating that the distribution of money produced by tourism—rather than tourist growth—is more critical in understanding why income gaps persist. Increased tourism revenue does not automatically eliminate poverty or spur development unless it is distributed in a way that helps low-income populations.



FF

Fig.no.1

Source- [Source-https://www.geographyrealm.com/geography-and-globalization/](https://www.geographyrealm.com/geography-and-globalization/)

Background of the study

Many contemporary national economies view tourism as an essential component, and it is also recognised as an important tool for economic growth. Individual regions and the entire nation are boosted in terms of development by the growth of entrepreneurship via tax revenue. The essential investments in tourism can be made thanks to tax money. In turn, this raises the desirability of the nation. The expansion of this industry on a global scale influences the degree of innovation, investment, and entrepreneurship because the demand for tourist services is increasing annually.

Globalisation is attributed to tourism as well as other influential forces.

It can be challenging to identify the factors driving globalisation in today's globe since less research has been done to compile and organise all the available data (McGrew, 2011). In most scholarly works, the significant factors that drive globalisation are broken down into four inextricably linked categories. These four categories include technologies, economy, and society (Dwyer et al.). It will not be surprising to find similar tendencies playing out in the travel and tourist business, given the close relationship between globalisation and tourism. According to Cohen (2012), tourism was a significant factor in creating the contemporary global transportation network, which made it possible to access previously inaccessible regions rapidly and efficiently.

Additionally, it contributed to financing the building of amenities such as airports, hotels, and resorts. Governments have simplified formerly cumbersome procedural processes to facilitate processing an ever-increasing number of visitors. The globalisation of the tourist sector has led to several side effects, including

the trans nationalisation of managerial ownership, marketing methods, service outsourcing, and the transmission of information.

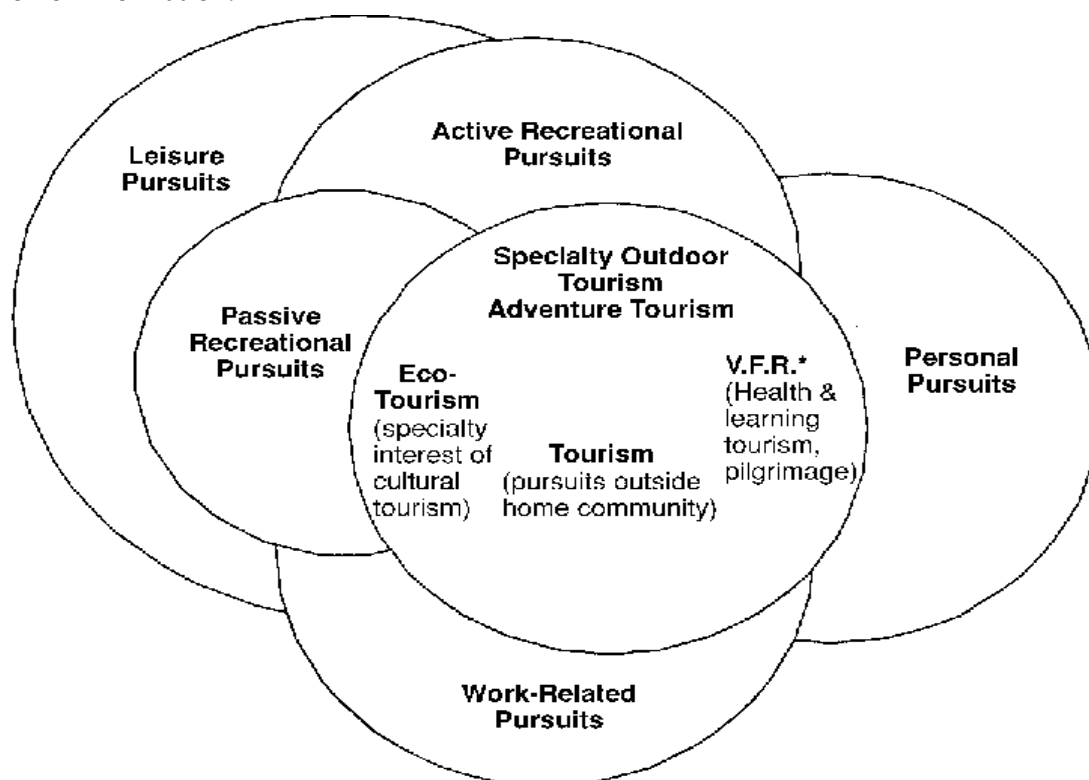


Fig No.2 categories of tourism activities

Source-<https://www.semanticscholar.org/paper/Tourism%2C-Globalization-and-Development>

India, as a nation, separated its cultural ideology from economic reality. It would then be clear that India needed to focus on the service sector in general and the hospitality sector to increase its ability to earn foreign currency, create jobs, and accelerate economic growth. The need to find ways to employ its constantly expanding population is one of India's main issues. In 1999, India had the highest percentage of unemployed people worldwide. 4.5 million people are unemployed in Germany, compared to 8 million in the USA. (Gee, 1997). The fact that these employment opportunities would be distributed across the entire nation and produced in the small and medium segments of the economy is crucial from India's perspective. Even though travel and tourism are still seen as "five-star" activities in India, the WTO has recognised this industry for contributing to reducing poverty through increasing employment. It should be highlighted that in the coming ten years, tourism is predicted to create the most jobs globally, and India will need to take concrete action to capitalise on this trend.

Literature Review - Raval (2015) explored that the microanalysis of a few of Gujarat's tourism development plans investigated how closely related the industry is and how difficult it is to research because it is difficult to measure effects accurately. Therefore, there is still an opportunity for research in this area. Government can identify more effective programmes from the state's perspective; it can also determine the shortcomings of earlier programmes and provide instructions for upcoming action plans. Even those who desire to perform comparative investigations could find it helpful. Scott A. Cohen (2017) reviewed that tourism discourse has

changed since the 1960s and then concentrates on seven areas that, in our opinion, are at the forefront of recent advances in the sociological study of tourism: emotions, sensory experiences, materiality, gender, ethics, authentication, and the philosophical underpinnings of tourism theories. The study of new aspects of tourist phenomena, the application of increasingly specific novel theories from other fields to tourism, and an increased focus on the question of whether tourism is an intellectual or cultural endeavour are the three general trends that we find have characterised the sociology of tourism in recent years. Bhavik Swadia (2015) revealed that travel and tourism significantly impact our country's social and economic growth. The globalised world's present economic climate has shown that tourism has been booming for 2017. Travel and tourism directly contributed to the global GDP from 2.3% in 2016 to 2.4% in 2017. Instead of just seeing new places, tourism has evolved into a chance to grow businesses, improve relations between nations, and value cultural diversity. In addition to uniting various countries and populations, it contributes substantially to social and economic advancement.

The structures of the globalisation process - a sociological understanding- Disagreements in the scientific community revolve around globalisation, and numerous writers consider it a rebuttal of the neo-Marxist theory of the world system, the theory of dependent development, and imperialism. Robertson's expansive vision of globalisation, which is grounded in the concept of modernisation theory, is optimistic regarding the prospects for development in the Third World. The process of economic, social, cultural, and political activity occurring beyond international borders is referred to as globalisation. The same author asserts that several different factors are considered when analysing globalisation. Mazarr (2022) characterised the advent of contemporary information and communications technology has made faster sales, improved global telecommunications, and expanded access to the media hallmarks of globalisation. Within the framework of globalisation, Mazarr examines factors such as natural resources, cultural transformations, the expansion of metropolitan areas, and technological advances. Even while it is generally accepted that nations that take part in the globalisation process would profit from trade liberalisation in the long term since it will enable such countries to concentrate on business sectors in which they have a comparative advantage, In their 2003 study, Sugiyarto, Blake, and Sinclair observed that a There is a potential for several problems to arise, such as an imbalance in the trade deficit as a result of increased consumer purchases of inexpensive imports, a budget deficit for the government as a result of the government. When looking at how globalisation influences Indonesian tourism, the same authors conclude that globalisation does not always have a detrimental influence on the economy of regional regions. In addition, they discuss how globalisation and international travellers may bring about price reductions, an expansion of local services, and an increase in foreign exchange, all of which support an increase in future can output. Growth in the number of money tourists spend is one way that globalisation has improved the well-being of populations and broad macroeconomic trends. Examine the impact of globalisation on tourism by considering the current state of the world's economy and population. Smeral (Smeral, 1996) examined the effects that globalisation has had on tourism by looking at how it has influenced competitiveness and the tendencies of organisations in the tourism industry to link up with one another. This was done to investigate the effects that globalisation has had on tourism. The major objective of these organisations is to raise the amount of money they bring in while concurrently lowering the amount of money they spend. There is currently no one product that can service all the many

marketplaces that a tourist firm may potentially operate in all the time. This is because consumers' travel history, education levels, cultural awareness, and the impact of tradition, in addition to their hierarchy of priorities, differ substantially from one another. Buhalis and Costa (2008), the viability of the tourist industry will be decided in the future by how well it interacts with other companies and how well it is related to other industries. From the viewpoint of the process and the cause's impacts, this parallel may be monitored in the market segment corresponding to changes in demand's demographic aspects. One of the primary justifications in favour of tourism's continued success is the necessity of recognising significant trends, capitalising on the beneficial benefits those trends may have, and mitigating or preventing their negative effects. This is one of the primary justifications for tourism's continued success. For instance, new market segments are developed because the globe's population is becoming older, that older individuals tend to lead more active lifestyles. These individuals are better positioned to participate in tourist movements actively to introduce preferences centred on new products and active participation in their creation. On the other hand, substantial changes in the physical dimension of the macro environment have directly impacted trends in tourist behaviour in which tourists prefer places that provide safe and environmentally friendly products. This influences new travel patterns, as well as others which will result in the creation of new and inventive items. Tourism and globalisation are two aspects of the same phenomenon that are extremely dependent upon one another. As a result of globalisation, people are now better able to communicate with one another and express their opinions and beliefs in a greater range of situations. This opens more opportunities for people to engage in meaningful dialogue. These settings include political, environmental, technological, cultural, and economic settings. As a direct result of these interactions, it is now possible for massive amounts of information to be disseminated across the entire world's population. People are now able to understand one another better even though there are linguistic, religious, and cultural boundaries, which has led to a significant increase in travel. of most significant barriers of the global tourism industry is the breakdown in political communication that can occur between different governments. The same barrier has thwarted attempts at globalisation for the past more than half a century. On the other hand, it is heartening to observe how people from different countries are breaking free of the racial, tribal, religious, and political cocoons they have grown up in and embracing their humanity. A huge population have the realisation that it is in everyone's best interest to work together as a society rather than antagonise one another over perceived inconsistencies, and this trend is expected to continue. Both globalisation and tourism have reaped significant benefits as a direct result of this trend.

The specialisation of Contemporary Tourism- Even while there is a possibility that general recreational tourism, which is possibly the most prevalent kind of tourism overall, has some aspect of interest in the unique, the topic of this article is not able to cover it. In the same way that strolling in snow boots could be a good break for people who wear shorts year-round, going on vacation to the beach and spending the entire day wearing nothing but a swimsuit or short pants might be a welcome shift from the usual routine. The new setting makes it possible for individuals to behave in ways that are less constrained socially and makes it possible to reorganise their timetables. It gives the green light to relax and break old routines. Along with the disruption of the normal order of things comes the vicarious pleasure of perceiving a higher rank and the right to privileged service from the people in the community. It is not required that vacation travel of this

sort take place in a distant nation; nevertheless, it does appear that the traveller's ability to relax and let go of their social inhibitions is facilitated by the distance travelled and the differences in the culture of the host country. The packaging sector frequently combines the experience of meeting people from other cultures with leisurely vacations spent at the beach. Sun, sand, sea, and sex are all things that may be found in exotic settings, and the dissolution of social inhibitions that can accompany this can be attributed to the uniqueness of the setting. Examples of both types of tourism include gambling trips and the rapidly developing sex tourism. These kinds of vacations are a distinct departure from the typical beach trip with the family and have developed as an offshoot of the more traditional kind of recreational tourism.

Recommendations- The growth of international tourist traffic directly affects the size and degree of global tourism development, investment strategy, and infrastructure development and planning. Tourism businesses are crucial in promoting travel destinations and supporting their growth. They work to enhance the product and produce extra value for visitor demand. Therefore, the individualisation of travel goals and preferences, coupled with tourists' rising demands and expectations for the calibre of tourist services, plays a significant role in determining the current tourist offering. The shifting interests and needs of travellers are reflected in global trends in tourism. Throughout the year, there is a discernible increase in the number of overseas journeys, and the rising number of flights favours this phenomenon. Globalisation is a modern phenomenon that has a significant effect on how the world economy is developing overall. All economic factors have an impact on the growth of local and international tourism. Tourism is fundamentally an international movement that advances knowledge of social systems, religions, and customs. It is the most powerful and adaptable economic force in the world economy. Additionally, it generates a lot of employment possibilities and is an important export product. Tourism is a modern manifestation of globalisation that emerged and took shape at a particular point in the history of human society. Its effect encompasses a range of scientific disciplines in human activity, including social aspects, religious relationships, cultures, and others. There is fierce competition among tourism destinations, and more goals are competing based on their ability to meet the needs of potential clients. The tourism market, which giant, worldwide firms, is dominating, is where small and medium-sized businesses must compete for survival.

Conclusion- The travel and tourism sector is one of the important areas for global economic growth and job creation. New tourism has become a significant engine of socioeconomic development due to the ever-increasing number of locations that opened their doors to tourists and made investments in the tourism industry. This has resulted in increased export profits, the formation of new jobs and businesses, and the building of new infrastructure. One of the greatest and fastest expanding economic sectors in the globe over the past 60 years has been tourism, which has seen continual expansion and diversification. In conclusion, there are an infinite number of ways in which globalisation and marginalisation might be associated, some of which are totally unrelated to the subject matter of this essay. A highly marginal demographic that is quite tightly tied to the socio-economic processes of globalisation are migrant workers from other countries, the majority of whom are in the country illegally. They expand because of globalisation and act as a lubricant for the global economy, which ultimately results in even higher volumes of international migration.

Reference

1. Blake, Sinclair (2003). "Tourism Crisis Management: US Response to September 11, *Annals of Tourism Research*", Vol. 30, (4), pp. 813-832
2. Bruner, Edward M. (1991) 'Transformation of Self in Tourism', *Annals of Tourism Research* Vol.18, pp. 238-50.
3. Buhalis, D, Law, R. (2008). "Progress in information technology and tourism management: 20 years on and 10 years after the Internet – The state of tourism research, *Tourism Management*", Vol.29. (4). pp.609 – 623.
4. Cole, Stroma. 2009. "Cultural Tourism, Community Participation and Empowerment". In *Cultural Tourism in a Changing World: Politics, Participation and (Re) presentation*, edited by Melanie K. Smith and Mike Robinson. pp.89-103
5. Giampiccoli, Andrea. 2007. "Hegemony, Globalization and Tourism Policies in Developing Countries". In *Tourism and Politics: Global Frameworks and Local Realities*, edited by Peter M. Burns, and Marina Novelli, pp.177-180.
6. Mazarr (2002). "Information Technology and World politics, Palgrave, New York", pp. 3 – 7.
7. Robert E. (1997) 'Tourism and the State: Ethnic Options and Constructions of Otherness', in Michel Picard and Robert E. Wood (eds) *Tourism, Ethnicity and the State in Asian and Pacific Societies*, pp. 31–34.
8. Smeral, E. (1996). Globalization and changes in the competitiveness of tourism destinations, 46th Congress Globalisation and Tourism. Rotura: Publication of the International Association of Scientific Experts in Tourism
9. Smeral, E., Weber, A. (2000). "Forecasting international tourism trends to 2010. *Annals of Tourism Research*", Vol. 27, (4), pp. 982-1006.
10. Van Den Berghe, Pierre L. (1980) "Tourism as Ethnic Relations: A Case Study of Cuzco, Peru', *Ethnic and Racial Studies* "Vol. 3(4), pp. 375–92

भारतीयशिक्षासमाजयोः जातिभेदस्य प्रभावः

प्रमोद कुमार दास

शोधच्छात्रः, शिक्षाविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः।

Article Info

Volume 5, Issue 4

Page Number : 48-51

Publication Issue :

July-August-2022

Article History

Accepted : 20 July 2022

Published : 30 July 2022

शोधसारांशः- सर्वकार एतेषां समुदायानां सम्बोधनं कृत्वा विविधान् अभियानान्, व्याख्यानानि चायोजयति, तेषाम् अधिकाराणां विषये अवगतं करोति। एते प्रयत्नाः समाजस्य केषुचित् वर्गेषु फलप्रदाः अभवन् किन्तु व्यापकरूपेण समस्याद्यापि वर्तते। अद्यत्वे अस्माकं देशो यत् अस्ति तस्मिन् अत्यन्तं योगदानं दत्तस्यैकस्य महतो नेताजनस्योद्धारणेनाहं समापनमिच्छामि धर्मो मुख्यतया सिद्धान्तमात्रस्य विषयो भवितुमर्हति। नियमस्य विषयो न भवितुमर्हति। यस्मिन् क्षणे नियमेषु क्षीणः भवति तस्मिन् क्षणे धर्मत्वं निवर्तते यतस्सच्चिदानन्दधर्मस्य सारभूतम् उत्तरदायित्वं हन्ति - डा. बी. आर्. अम्बडकर श्रेणियानागरिक सेवाएँ, राजनीतिविज्ञान, सामाजिकमुद्दे, समाजशास्त्र शब्दकोश, भारतसमाजशास्त्रं, समाजशास्त्रं वैकल्पिको भारतीयराजनीतिकविचारः।

मुख्यशब्दाः- अनुसूचितजातिछात्राः, जनजातिछात्राः, भारतीयः, शिक्षा, समाजः जातिः, भेदः, प्रभावः।।

भारते अनुसूचितजाति-जनजातिजनानां समक्षं याः समस्याः तासामुपायाः च निबन्धो गुञ्जिकर भारतस्य जातिव्यवस्था मुख्येष्वैतिहासिकपरिमाणेष्वन्यतमोऽस्ति यत् जनानां धर्मस्य सम्प्रदायस्य व्यवसायस्य भाषायाः जीवनशैल्याश्चाधारेण जनानां भेदं च कर्तुं प्रयतते यद्यपि प्रत्येकस्मिन् भारतीयसमाजस्य जातिव्यवस्था भिन्नतां जनयति स्म, जनसमूहस्य मध्ये एकीकरणं जनयितुं न प्रोत्साहयति स्म, तथापि सा प्रत्यक्षतयाच्छादितवती यस्य परिणामेण समाजस्य विभिन्नानां विपन्नवर्गानां विनयशीलता, बहिष्कारश्च अभवदस्य फलस्वरूपम् अनुसूचितजातिः (SC), अनुसूचितजनजातिः (ST) च भारते सर्वाधिकं वंचितसामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिकसमूहेषु अन्यतमाः सन्ति। भारतस्य अनुसूचितजनजातयो देशस्यादिवासिनो वास्तविकाः मूलनिवासिनस्सन्ति। अस्य समुदायस्य जनाः क्षुद्रश्रेण्येषु व्यापारेषु च निरताः भवन्ति। तथा च प्रारम्भिकानि तकनीकानि पद्धतीश्चानुसरन्ति ये क्रमेण तेषां स्वनिर्भरमार्थिकरूपेण च स्थिरं जीवनं पर्याप्तं न भवति। दुर्गते ते हस्त-मुख-अस्तित्वं जीवन्ति। अनुसूचितजनजातयः प्रायो नगरस्य बहिरन्यसमुदायेभ्यः पृथक् भवन्ति। एते समुदायाः रूढिवादिनस्सन्ति। स्वकीयानां विशिष्टा अकालसंस्कृतेः अनुसरणं च रोचन्ते।

अनुसूचितजनजातयो नादिवासीत्युच्यन्ते, न चादिवासीत्युच्यन्ते न च ते स्वयमेव वर्गरूपेण व्यवहियन्ते। प्रायस्तेषामनुसूचितजातिभिस्सह व्यवहारः क्रियते। ततः परं पश्चात्तापवर्गस्य एकस्समूह इति कल्प्यते। भारते अनुसूचितजाति - 9 जातिः कः ? जातिः सामग्रीं प्रति गच्छन्तु मेनू भारते अनुसूचितजाति/जनजातिजनानां समक्षं ये समस्याः तेषामुपायाः च। भारतस्य जातिव्यवस्था मुख्येष्वैतिहासिकपरिमाणेषु अन्यतमोऽस्ति यत् जनानां धर्मस्य सम्प्रदायस्य व्यवसायस्य भाषायाः जीवनशैल्याः चाधारेण जनानां भेदं भेदं च कर्तुं प्रयतते यद्यपि प्रत्येकस्मिन् भारतीयसमाजस्य जातिव्यवस्था भिन्नतां जनयति

स्म जनसमूहस्य मध्ये एकीकरणं जनयितुं न प्रोत्साहयति स्म, तथापि सा प्रत्यक्षतयाच्छादितवती यस्य परिणामेण समाजस्य विभिन्नानां विपन्नवर्गाणां विनयशीलता, बहिष्कारश्चाभवत् अस्य फलस्वरूपं अनुसूचितजातिः (SC) अनुसूचितजनजातिः (ST) च भारते सर्वाकं वंचितसामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिकसमूहेष्वन्यतमाः सन्ति।

डी.एन्.मजुमदारस्य मते - “जातिः बन्दवर्गः” अर्थात् वर्गस्सम्पत्ति-व्यापार-व्यापार-आधारित-जनानामभिप्रायोऽर्थात् स्वकीयं जाति-व्यवस्थां परिवर्तयितुं न शक्नोति किन्तु वर्गव्यवस्थां परिवर्तयितुं शक्नोति तथा चैकस्मिन् समये अनेकवर्गस्य सदस्यो भवितुमर्हति। भारतीयजातिव्यवस्था जनानां वर्गीकरणं वर्गा इति चतुर्णां श्रेणीक्रमेण श्रेणीकृतानां जातिषु यथा - ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः शूद्रश्चेति ब्राह्मणाश्श्रेष्ठाः पुरोहितवर्णाश्चेति मन्यन्ते स्म, क्षत्रियो राजनैतिकनेतारस्सैनिकाः चासन्, वैश्या वणिजः आसन्, शूद्राः अपि निम्नवर्णा इत्युच्यन्ते, हस्तश्रमिकाः आसन्। अनुसूचितजातिसमुदाया एव आसन् ये विद्यमानवर्णव्यवस्थायाः बहिः आसन् इति कारणेन अवर्णा इति गण्यन्ते स्म। ते हिन्दुसमाजस्य जनानां वर्ग इति मन्यन्ते स्म ये चतुर्णां प्रमुखवर्णानां न सन्ति, ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रैः। एते समुदायाः पश्चात् दलित-हरिजन-नाम्नामनुकूलनं कृतवन्तः। प्राचीनभारते अनुसूचितजातीयानाम् अनुसूचितजातीनाञ्च समक्षं ये समस्याः, मुद्देः, भेदभावश्च हिन्दुविधिपुस्तकेषु चत्वारो वर्णा एव सन्ति न तु कदापि पञ्चम इत्याग्रहः कृतः। यत् भारतस्यादिवासीजनानाम् अस्पृश्यत्वेन न स्वीकुर्वितुं कारणरूपेणोपयुज्यते स्म। सामाजिकस्थिति एतेषां समुदायानां जनाः समाजेन बहिष्कृताः आसन्, कृपात् जलमाकर्षयितुम्।

सार्वजनिकप्रक्षालनागारस्य उपयोगेनोच्चजातीयैस्सह भोजनं कर्तुमित्यादीनां सार्वजनिकसेवानाम् उपयोगस्यापि विरोधं कुर्वन्ति स्म व्यवसाय-क्रमेण ते एतादृशेषु व्यवसायेषु प्रवृत्ताः अभवन् येषु मुख्यतया स्वच्छता, पशुशवस्य निष्कासनं, मलस्य शोधनम्, अन्यानि कार्याणि सन्ति येष्वशुद्धसामग्रीणां सम्पर्को भवति स्म अन्नस्याधारेण भेदभावः - उच्चजातेः सदस्याः केवलं पक्काभोजनं (घृते पाकं) खादन्ति स्म यदा तु, निम्नजातिः केवलं कच्चाभोजनं (जले पक्वं) खादति स्मेति कारणतस्तेषां भोजनस्य सेवनस्यापि प्रतिबन्धाः स्थापिताः आसन्। उच्चजातेस्सदस्याः निम्नवर्णात् भोजनं ग्रहीतुं नार्हन्ति स्म। दुर्गतिषु तेषामुपस्थित्या कतिपयानि वस्तूनि दूषितानि चेत् अपराध-आरोपस्यापि सामना करिष्यन्ति, यथा - पुरुषोऽयोग्यमन्दिरं प्रविशति चेत् अपराध-आरोपस्य सामनां करिष्यति धार्मिकविषयाः-मन्दिरे देवदेव्याः पूजां कर्तुं तेषामधिकारो नासीत्। उच्चजातीयजनाः यस्मिन् क्षेत्रे निवसन्ति स्म तस्मिन् क्षेत्रे अथवोपनिवेशेष्वपि निम्नजातीयानां प्रवेशो निषिद्धः आसीत्। शिक्षायाः वंचिताः - परम्परागतरूपेण अस्पृश्याः अपि शिक्षाप्राप्त्यर्थं वंचिताः आसन्।

सार्वजनिकशैक्षिकसंस्थानामुपयोगं कर्तुं नानुमतिः आसीत् न च तेषां सम्पत्तिस्वामित्वस्याधिकारः आसीत् एकमात्रं प्रयोजनं तेषामस्तित्वं जातिव्यवस्थायाः माध्यमेन उच्चजातीनां सेवां कर्तुमासीत्। आर्थिकविषया-प्राचीनकाले जनानां स्वपसन्दस्य व्यवसायस्याभ्यासं कर्तुं सौभाग्यं नासीत्। अपि तु तेषां परिवारस्य व्यवसायस्य अनुसरणं कृत्वा स्वविरासतामग्रे नेतुम् अनिवार्यतया कृतम्। अतःपरं वयं वक्तुं शक्नुमो यत् जातिव्यवस्थायाः समाजस्य आर्थिकस्थितौ हानिकारकः प्रभावोऽभवत् तथा च निम्नजातीयानां कृते समाजे स्वस्य आर्थिकसामाजिकसांस्कृतिकस्थितिषु सुधारस्य अवसरोऽपि न प्राप्तः। आधुनिकभारते अनुसूचितजातीनाम् अनुसूचितजनजातीनां च समक्षं ये समस्याः 16 शताब्द्याः अनन्तरं हिन्दुसमाजस्यात्याचारस्य छत्रं बहिः आनेतुं निम्नजातीनां जनाः बौद्धधर्मं स्वीकृतवन्तः। तेषां धर्मान्तरणं तेषामुत्तमतायै साहाय्यं कृतवान् किन्तु परिवर्तनं केवलं पर्याप्तप्रमाणेनैव लक्षितम्। श्रम-अद्यतन-रिपोर्टानुसारं समाजस्य अन्येभ्यः वर्गेभ्योऽपेक्षयानुसूचितजाति/जनजातिसमुदायस्य कृषिमजदूराः अधिकाः सन्ति। बालश्रमस्य विषये वदन् भारते 6 कोटिबालश्रमेषु 40% अनुसूचितजातिपरिवारेभ्यः आगच्छन्तीति कथ्यते।

एतादृशानि प्रमाणान्याधारीकृत्य अनुमानं कर्तुं शक्नुवन्ति यत् अनुसूचितजाति/जनजाति-समुदायस्य जनाः स्वशिक्षणस्यापेक्षया श्रमस्य प्रत्यधिकं प्रवृत्ताः सन्ति। महिलानां समस्याः अद्यत्वे अपि दलितस्त्रीणां जीवनस्य प्रत्येकं बिन्दौ

बहुसमस्यानां सामना भवति, जातिविशिष्टस्यात्याचारस्य शिकाराश्च भवन्ति। तेषां कार्यस्थले अप्यवनयनं भवति, अपि च तेषां कृते स्वसमुदायात् बहिः गत्वा स्वतन्त्रतां प्राप्तुमतीव भारपूर्णं भवति, यत् तेषां स्वस्वपरिवाराः तान् च प्रेरयन्ति राजनीतिषु जातिः - अद्यतनकाले जातिः अप्यकस्य निश्चितप्रकारस्य राजनीतेः अन्तो निरुद्धाभवत्, विशेषतस्सकारात्मककार्याणां नीतेः अनन्तरं - सार्वजनिकक्षेत्रस्य रोजगारस्योच्चशिक्षायाश्च नियतकोटानामथवारक्षणस्य रूपं गृहीत्वा यत् पूर्वमनुसूचितपर्यन्तं सीमितम् आसीत् जातिः। अस्मिन् वास्तविकतायाम् अद्यत्वे हिंसका उच्चजातीयस्वजातिं निम्नजातीयवर्गे सङ्गृहीतुं प्रयतन्ते, विरोधं च कुर्वन्ति, येन तेभ्यः प्रदत्तानां विशेषाधिकारानाम् अनुचितलाभो भवति कदाचित् समाजे विद्यमानस्य छद्मवादस्य कारणेन लाभान्वितानां राजनैतिकनेतृणां कृते एतादृशाः भेदभावाः अपि वरदानरूपेण सिद्धाः भवन्ति, यत् ते भावानां धर्माणां चाधारेण जनसमूहस्य मतम् अधिकतमं समर्थनं च प्राप्तुमुपदिशन्ति। एतेन च समाजस्य किमपि हितं न भवति।

दारिद्र्यं शोषणं च यत्र जनाः यत् साधयन्ति तत् परस्परं वदन्ति न तु आरोपयन्ति तत्र नगरकेन्द्रेषु जाति-आधारितं शोषणं ग्राम्यक्षेत्रेषु अधिकं दृश्यते। मेट्रोराजनीतिकनगरेषु कष्टेनैव किमपि प्रकारस्य भेदभावस्य साक्षी भवति, परन्तु ग्रामेषु जनानाम् आर्थिकसामाजिकदृष्ट्या यातनाः सहन्ते। उच्चजातीयधनऋणदातृणां समस्याः, आर्थिकास्थिरतेत्यादयो निम्नजातीयजनानां समग्रविकासं प्रति खतराणां मध्ये अल्पा एव सन्ति। आत्महत्यापराधाश्च निरन्तरशोषणस्य कारणेन, मौद्रिक-प्रौद्योगिकीसुविधानाम् अभावात् च वयं बहवो दलित-कृषकाः छात्राः च मृत्योः पलायनं प्राप्नुवन्ति इति साक्षिणः पश्यामः। एतत् एमिल् डुखेम् इत्यनेन व्याख्यातस्यात्महत्यायाः प्रकारेण सह गच्छति। अयमात्महत्यासिद्धान्तः (Anomic Suicide) इति कथ्यते। एतादृशः आत्महत्या सामाजिकसन्तुलनस्य निश्चितविच्छेदस्याथवा दिवालियापनानन्तरम् आत्महत्यायाः कारणेन भवति। एकस्याः प्रतिवेदनस्य अनुसारं 1981 तः 2000 पर्यन्तं 16 वर्षेषु अनुसूचितजातीनां विरुद्धं कुलम् 357945 अपराधानाम् अत्याचाराणां च प्रकरणाः कृताः। अनेन प्रतिवर्षं प्रायः 22371 अपराधाः अत्याचाराः च भवन्ति। 2000 तमे वर्षे अत्याचारस्य हिंसायाः च विच्छेदः एतादृशोऽस्ति यत् 486 हत्या, 3298 गम्भीरआहतप्रकरणाः, 260 अग्निप्रकोपस्य, 1034 बलात्कारस्य प्रकरणाः, 18664 अन्यापराधानां प्रकरणाः च मार्क्सवादी साम्यवादी दलस्य प्रतिवेदनं शिक्षा-अनुसूचितजातीनाम् अनुसूचितजनजातीनां च गतिशीलसमस्यानां समाधानरूपेण सर्वकारस्यान्यनेतृणाञ्च प्रयत्नाः पर्याप्ताः न दृश्यन्ते। समुचितशिक्षायाः अभावश्शिक्षकस्य अभावोऽपर्याप्तसुविधाः, केवलं मूलभूतसुविधानाम् उपलब्धिः वा एतेषां जातियुवानाम् उच्चजातीयवित्तीयसक्षमजनसमूहेन सह बौद्धिक आधारेण पङ्क्तौ न स्थातुं शक्नोत्येतेन ते शैक्षिकक्षेत्रात् विचलिताः भवन्ति, नगरेषु क्षुद्रकार्यं कर्तुं च प्रेरिताः भवन्ति। सामाजिक-असमानताविषये समाजशास्त्रीयसिद्धान्ताः द्वन्द्व सिद्धान्तद्वन्द्व सिद्धान्तकारधर्मं सामाजिकविषमतायाः प्रतिमानाः निर्वाहयितुं साहाय्यं कुर्वती संस्थारूपेण पश्यन्ति। नारीवादी संघर्षसिद्धान्तकाराः धर्मस्य विषये लैङ्गिकविषमताविषये केन्द्रीभवन्ति। सिद्धान्तकाराः तु धर्मेण पालितं स्तरीकरणं समाजे अकार्यकरं हानिकारञ्च मन्यन्ते यतः एतेन धनिकानामूच्चजातीनां च लाभो भवति, निम्नजातीनां शोषणञ्च भवति सामाजिकस्तरीकरणविषये कार्यात्मकसिद्धान्तः कार्यवादिनो मन्यन्ते यत् स्तरीकरणं समाजे महत्त्वपूर्णं कार्यं करोति।

समाजशास्त्रज्ञाः डेविस्, मूर् च मन्यन्ते स्म यत् स्तरीकरणं समाजे महत्त्वपूर्णञ्च कार्यं कर्तुं जनान् प्रोत्साहयितुं समाजस्य पुरस्कारस्यासमानवितरणम् आवश्यकमित्ययं सिद्धान्तः। जातिव्यवस्थायाः स्पष्टीकरणं विश्लेषणञ्च कर्तुं न प्रयतते अपि तु समाजे विद्यमानस्य सामाजिकस्तरीकरणस्य विचारं केन्द्रीक्रियते, एतेन च समर्थयति। भारते अनुसूचितजाति/जनजातिविषयेषु सर्वकारेण प्रयत्नाः कृताः संविधानस्यानुच्छेदः 341 राष्ट्रपतिं स्वाधिकारस्य रक्षणाय, प्रचारार्थं च संविधानस्यानुसूचितजातीति परिभाषायाः व्याप्तेः अन्तस्सार्वजनिकसूचनां निर्गन्तुं स्थानविशिष्टसमूहान् वा समुदायं वा निर्गन्तुम् अधिकारं ददाति निम्नजातीयजनानां विरुद्धम् अपराधानाम्, अन्यायपूर्णलोपानाञ्च

निवारणायानसूचितजातिजनजाति:(अत्याचारनिवारण) अधिनियम: 1989 पारितस्तेषामपरि कठोरदण्डाः आरोपिताः अनुच्छेदः 17 “अस्पृश्यता” इत्यभ्यासं समाप्तं करोति तथा चास्पृश्यतायाः कारणेनोत्पद्यमानस्य कस्यापि विकलांगतायाः प्रवर्तनं कानूनानुसारं दण्डनीयोऽपराधो भविष्यति। सर्वकार एतेषां समुदायानां सम्बोधनं कृत्वा विविधान् अभियानान्, व्याख्यानानि चायोजयति, तेषाम् अधिकाराणां विषये अवगतं करोति। एते प्रयत्नाः समाजस्य केषुचित् वर्गेषु फलप्रदाः अभवन् किन्तु व्यापकरूपेण समस्याद्यापि वर्तते। अद्यत्वे अस्माकं देशे यत् अस्ति तस्मिन् अत्यन्तं योगदानं दत्तस्यैकस्य महतो नेताजनस्योद्धरणेनाहं समापनमिच्छामि धर्मो मुख्यतया सिद्धान्तमात्रस्य विषयो भवितुमर्हति। नियमस्य विषयो न भवितुमर्हति। यस्मिन् क्षणे नियमेषु क्षीणः भवति तस्मिन् क्षणे धर्मत्वं निवर्तते यतस्सच्चिदानन्दधर्मस्य सारभूतम् उत्तरदायित्वं हन्ति - डॉ. बी. आर्. अम्बडकर श्रेणियानागरिक सेवाएँ, राजनीतिविज्ञान, सामाजिकमुद्दे, समाजशास्त्र शब्दकोश, भारतसमाजशास्त्रं, समाजशास्त्रं वैकल्पिको भारतीयराजनीतिकविचारः।

सहायकग्रन्थसूची

- [1]. Desai, I. P., The Scheduled Tribes a Scheduled Caste High School students in Gujarat, Centre of Regional Developments Studies, Surat, Gujarat Pandora G.A.,1974.
- [2]. Elangovan, p., Problems Faced by SC and ST College students in pursuing their Education Pusumpantavar, Thirugnagan Alappa University, 1989.
- [3]. Geography, E.I., Education Problems of S.C. and S.T. College students in Kerala, Kerala University, Trivandrum, 1975.
- [4]. Ghurey, G.S., The Scheduled Tribes Popular Book, Depot, Bombay, 1959.
- [5]. Koul, S., Case Studies of Scheduled Tribes Failure Students at Middle and Matriculation Levels A.P., Dept. of Education, H.P., Shimla, 1985.
- [6]. Laksmamma, C., The study of Scheduled Caste and Scheduled Tribes High Schools Students in A.P., Dept o Sociology, Osmania University, A.P., 1982.
- [7]. Mathur, N. N. G., Problem of Tribal Education Past, Present and Future, Shiva Publishers and Distributers, Udaipur, Rajasthan, 1994.

ज्ञानशौर्यम्



Publisher

Technoscience Academy

(The International open Access Publisher)

Website : www.technoscienceacademy.com